www.mahisandesh.com

साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

R.N.I. No.
RAJHIN/2018/75539

ISSN : 2581-9208

माही संदेश

दस्तक दिल तक

मैं धरा हूं,
मैं जननी, मैं हूं उर्वरा
मेरे आंचल में ममता का
सागर भरा,
मेरी गोदी में सब सुख की नदियां भरीं
मेरे नयनों से स्नेह का सावन झरा।
दया मैं, क्षमा मैं, हूं ब्रह्मा सुता
मैं हूं नारी जिसे पूजते देवता।।

- शशि पाधा

वर्ष : 2 अंक : 12 मार्च : 2020 पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य : 35/-

नारी विशेषांक

जीने की सुंदर परिभाषा मां ही हमें सिखाती है...

सुधीर माथुर
संरक्षक-सलाहकार
माही संदेश
mathursudhmat@yahoo.co.in

स्व. प्रेमा माथुर जी

स्व. कैप्टन महाराज बिहारी माथुर जी

माही संदेश के इस नारी विशेषांक में अपनी मां स्व. प्रेमा माथुर जी की अनमोल यादें जो मेरे साथ हमेशा आशीर्वाद रूप में संग रहती हैं आपके साथ बांट रहा हूं कैसे एक स्त्री अपना दायित्व निभाती है, यूं कहें कि जिम्मेदारी निभाने में मां से बढ़कर कोई है ही नहीं...अपने ससुराल में शादी के बाद अपने कर्तव्य निभाने में हमेशा आगे रहीं, पिता सबसे बड़े थे तो घर की बड़ी बहू के रूप में अपने हर दायित्व को निभाया, यह मैंने अपनी मां से ही सीखा कि अपनी जिम्मेदारियों, अपने कर्तव्यों को कैसे निभाया जाता है, वर्ष 1966 में मेरे पिता स्व. कैप्टन महाराज बिहारी माथुर जी का निधन हुआ तब मेरी उम्र महज नौ वर्ष थी, इतनी कम उम्र में पिता का साया सिर से उठ जाना मतलब ज़िंदगी की खुशी का बहुत दूर चले जाना, हम पांच भाई बहिन थे, बिना पिता के हम पांच बच्चों को बड़ा करना, अपने स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए जीवन के संघर्ष में हमारे सुख के लिए मां खुद को तपाती रहीं, मेरे जन्मदिन पर मां मुझसे कहती थीं कि ईश्वर का धन्यवाद अर्पित करो कि जीवन का एक साल और बढ़िया निकल गया, हमें ईश्वर हमेशा देखता है, अगर आप किसी की सहायता कर सकते हो तो जरूरतमंदों की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहो। पिताजी के गुजर जाने के दस वर्ष बाद वर्ष 1977 में मां भी हमें छोड़कर ईश्वर के पास चली गईं, उस वक्त मैं कॉलेज में पढ़ रहा था, बस यह मलाल रहता है कि मां आज साथ होतीं तो उनकी सेवा करते हुए आज जीवन को बिताता...उन्होंने पूरी ज़िंदगी हम बच्चों को बनाने में लगा दी, आज जब उनको हर खुशी देता तो वो ईश्वर के घर चली गईं, लेकिन मेरी मां का प्यार हमेशा मेरे साथ रहता है, मेरी मां पर मुझे गर्व है, मेरे माता-पिता- मेरे मामा व बहिन का प्यार व आशीर्वाद हमेशा मुझे दिन प्रतिदिन ऊर्जा प्रदान करता है। सहनशक्ति से भरपूर ममता की प्यारी मूरत मेरी मां के जीवन मूल्य हमेशा मेरे आदर्श रहे हैं।

मेरी मां ने सिखाया कि हमेशा सच के साथ खड़े रहो, कभी भी किसी का दिल मत दुखाओ, हमेशा मीठा बोलो, इस ईश्वर ने हमें जो ये जीवन दिया है, इसे हमेशा बेहतर बनाने का प्रयास करो, मेरी मां से मैंने धीरज रखना, हमेशा जरूरतमंद की मदद करना सीखा है। आज भले ही मेरी मां शारीरिक रूप से मेरे पास नहीं है लेकिन मानसिक रूप से वो आज भी मेरे साथ हैं, उनकी बातें मेरे जीवनपथ में प्रेरणा बनकर कदम दर कदम साथ चल रही हैं...

मां के बारे में जितना लिखूं उतना कम है मुझे कवि व माही संदेश पत्रिका के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन के गीत की पक्तियां याद आ रही हैं कि-

जीवन देता है वो लेकिन
जीवन यही बनाती है
जीने की सुंदर परिभाषा
मां ही हमें सिखाती है...
इन शब्दों से क्या मैं
मां का प्रेम बयां कर पाऊंगा
वो तो सागर है खुशियां का
मुठ्ठी भर लिख पाऊंगा।।

सुधीर माथुर

माही संदेश (राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक डॉ. मदनलाल शर्मा*

v v v

संरक्षक-सलाहकार सुधीर माथुर*

v v v

प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन (98874-09303)

v v v

प्रबंध निदेशक डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*

v v v

सह-संपादक नित्या शुक्ला*
ममता पंडित*
डॉ. महेश चन्द*
वंदना शर्मा*
मधु गुप्ता*

v v v

आईटी सलाहकार सोनू श्रीवास्तव*
नवीन कानूनगो*

v v v

ब्यूरो चीफ रमन सैनी* (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र)

v v v

संवाददाता दीपक कृष्ण नंदन*
ईशा चौधरी*

v v v

अकादमिक सलाहकार डॉ. सुधीर सोनी*

v v v

बिजनेस हैड अनुराग सोनी*
राजपाल सिंह*

v v v

कानूनी सलाहकार शिव कुमार अवार*

v v v

सर्कुलेशन मैनेजर आर.के. शर्मा* (मुम्बई)

v v v

परामर्श समिति

माला रोहित कृष्ण नंदन* अरविंद शर्मा 'अज़ान'*
डॉ. गीता कौशिक* बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा* डॉ. मीना शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा* प्रकाश चन्द शर्मा*
राजकुमार शर्मा*

v v v

संरक्षक मंडल रामेश्वरी देवी*

v v v

डिजाइनिंग सागर कम्प्यूटर 79765-17072

v v v

मुद्रण कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख

: कार्यालय :

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल :
mahisandesh31@gmail.com

मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

जीवन का आधार है नारी...

रोहित कृष्ण नंदन
प्रधान संपादक
माही संदेश
mahisandesheditor@yahoo.com

नारी के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। मां-पत्नी, बहिन, बेटी, मित्र आदि रूपों में नारी पुरुष को राह दिखाती आ रही है। हर मुश्किल से मुश्किल परिस्थिति में भी नारी का साहस हमेशा विजयी रहा है। सहनशीलता, दया, विनम्रता, निपुणता, साहस, आदि गुणों से भरपूर नारी का व्यक्तित्व हमें जीवन को जीना सिखाता है। वर्तमान समय में जब नारी के प्रति बढ़ते अपराधों की तरफ ध्यान जाता है तो एक ही बात सामने आती है कि नारी कमजोर नहीं हुई है, ये अपराध इसलिए बढ़ रहे हैं कि नारी की रक्षा करने में हम पुरुष असमर्थ बन रहे हैं, क्यों एक स्वर में इतने अपराधों के प्रति आवाज़ नहीं उठ पाती, क्या हम सिर्फ अपने घर के पुरुष ही हैं, क्या किसी की बेटी हमारी बेटी नहीं बन सकती, पुरुष कमजोर हुए हैं तभी नारी के विरुद्ध अपराधों में बढ़ोत्तरी हुई है। सिर्फ आठ मार्च को ही महिला दिवस पर जागरूकता क्यों दिखाते हैं, हम हर दिन महिलाओं के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने लगें तो यकीनन अपराधों पर अंकुश लग जाएगा। हम बस देखते हैं सरकार है न यह सब संभालने के लिए, सरकार के भरोसे मत बैठिए सरकार तो खुद जनता के भरोसे बैठी होती है, हम जिस दिन अपनी जिम्मेदारियों को भलीभांति निभाने लग गए तो सरकार स्वतः अपने कर्तव्य का पालन करती नज़र आएगी। आज किसी भी क्षेत्र में नारी पुरुषों से पीछे नहीं हैं यह हमारे लिए गर्व की बात है, अगर आपकी पत्नी, आपकी बेटी आपकी मित्र आसमान छू रही है तो इससे बढ़कर क्या खुशी होगी। मेरे जीवन में नारी रूप में मां, पत्नी और बेटी का बहुत बड़ा योगदान है या यूं कहें कि इनके बिना जीवन की कल्पना भी बेमानी साबित होगी। जहां मां ज़िंदगी के सच से रुबरु कराती है, वहीं पत्नी हर मुश्किल में हौंसला बढ़ाती है, फिर बेटी इसी हौंसले को पंख लगाकर मंजिल तक ले जाती है। मेरे लिए रामायण, गीता, कुरान सी हैं मां-पत्नी और बेटी...या यूं कहूं कि जीवन का आधार हैं ये नारी..इनका रहूंगा मैं सदा आभारी...

शेष फिर

एक नजर यहां भी

हमारा कानून
महिलाओं के कानूनी अधिकार — **शिवकुमार 'अवार' फौजदार** — 5
नारी की बात
बदलते परिवेश में भारतीय नारी — **डॉ. सुरेन्द्र भास्कर** — 6
जीवन संदेश
अमानवीय प्रथा के विरुद्ध एक साहसी महिला की कहानी — **सुरेश चंद्र** — 8
आधी आबादी
हकदार क्यों बदल जाते हैं? — **मीना परमार** — 9
बजट विशेष
राजस्थान सरकार के अविवेकपूर्ण बजट एवं नीतियों की एक छोटी-सी बानगी — **राजेन्द्र सिंह गहलोत** — 10
मन की बात
गर्व से कहो - 'हाँ मैं हाउस वाइफ हूँ' — **पूर्ति वैभव खरे** — 12
कथा संदेश
अंतर्मुखी — **मनीषा मिशा** — 13
नारी संदेश
'हर सफल पुरुष के पीछे एक महिला का हाथ होता है' — **रीमा मिश्रा 'नव्या'** — 14
प्रेरणा
अशिक्षा से मुक्ति का ध्येय ले चल पड़ी- लवलीना सोगानी — **रोहित कृष्ण 'नंदन'** **ममता पंडित** — 16
किताबों की दुनिया
नीरज गोस्वामी की कलम से — **नीरज गोस्वामी** — 18
काव्य-कलम — 20-26
सिनेमा संदेश
'मौसम आया है रंगीन' सुलोचना चव्हाण — **शिशिर कृष्ण शर्मा** — 27
सलाम
इच्छाशक्ति से अपनी दुनिया बदल डाली- विशाली — **ममता पंडित** — 30

आवरण चित्र - अरुण मजूमदार*

जयपुर निवासी अरुण पेशे से एक बहुप्रतिष्ठित कंपनी में सहायक मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं, दस वर्ष पूर्व शौकिया रूप से शुरु की गई फोटोग्राफी आज एक जुनून का रूप ले चुकी है। इन्हें Street life photography पसंद है।

पाठक संदेश

माही संदेश का फरवरी अंक पढ़कर प्रेम को और करीब से जाना, पत्रिका का हर अंक सहेजने योग्य है। सुरेश चंद्र जी का बिटिया के नाम लिखा गया पत्र दिल का छू गया, सिनेमा संदेश में शिशिर कृष्ण शर्मा जी की लेखनी से निम्मी जी के बारे में जानने का अवसर मिला। **मदनमोहन शर्मा**
शालीमार बाग, नई दिल्ली

माही संदेश के फरवरी अंक में कुष्ठ पीड़ितों की सेवा में समर्पित जीवन-थिया मुकली जी से परिचय हुआ, अच्छा लगा यह जानकर कि इस तरह कोई कुष्ठ पीड़ितों की सेवा में लगा हुआ है। पत्रिका संग्रहणीय है। बस से उतरते ही बुक स्टॉल पर रखी हुई पत्रिका को खरीदकर पहली बार पढ़ा तो लगा कि इस तरह की पत्रिकाएं घर में मंगानी चाहिए, संपादक महोदय रोहित कृष्ण नंदन जी को साधुवाद। **शंकर लाल चौधरी**,
जयपुर राजस्थान

'**एनिमिक** हो जाती हैं स्त्रियां' शीर्षक से मीना परमार और प्रेम पथ में डॉ. नीना छिब्बर, माला रोहित कृष्ण नंदन, कथा टीस में विजेता सूरी रमण, प्रेम की अभिव्यक्ति में वर्तिका अग्रवाल की लेखनी ने मन को छू लिया, काव्य कलम की सभी कविताएं, गज़ल बेहद सराहनीय हैं। अब तो हमें पत्रिका के हर अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है।
पूजा राठौड़, *मंदसौर (मध्य प्रदेश)*

'माही संदेश' मासिक पत्रिका विज्ञापन दर

पत्रिका का कवर पृष्ठ	₹ 1,00,000
सामने के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 30,000
पीछे का कवर रंगीन	₹ 80,000
पीछे के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 30,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम पृष्ठ	₹ 10,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम आधा पृष्ठ	₹ 5,100

संपादक
माही सन्देश
खाता संख्या
37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखा: कनक विहार,
हीरापुरा, जयपुर
पेटीएम-9887409303
दूरभाष- 9828673031

महिलाओं के कानूनी अधिकार

शिवकुमार 'अवार' फौजदार
एडवोकेट, राजस्थान उच्च न्यायालय
कॉर्पोरेट कंसलटेंट, प्रेरक प्रवक्ता,
कॉर्पोरेट लॉयर मो. 8290123456

भारतीय संविधान में महिलाओं की सुरक्षा और समानता से जुडे कई कानून बनाए गए हैं, जो महिलाओं को सशक्त बनाते हैं। आज जानें ऐसे ही कुछ भारतीय कानूनों के बारे में, जिनकी जानकारी हर महिला को होनी चाहिए।

सम्पत्ति का अधिकार

हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 पुरूषों के साथ समान रूप से पैतृक सम्पत्ति विरासत में महिलाओं के अधिकार की मान्यता देता है। इस अधिनियम के तहत नए नियमों के आधार पर पुश्तैनी सम्पत्ति पर महिला और पुरूष दोनों का बराबर हक है।

कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ अधिकार

मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेग्नेंसी एक्ट 1971 मानविकी और चिकित्सा के आधार पर पंजीकृत चिकित्सकों द्वारा गर्भ धारण की समाप्ति के लिए अधिकार प्रदान करता है। पूर्व गर्भाधान और प्री नेटल डायग्नोस्टिक तकनीकी (लिंग चयन पर प्रतिबन्ध) अधि. 1994, गर्भाधान से पहले या बाद में लिंग चयन पर प्रतिबन्ध लगाता है और कन्या भ्रूण हत्या के लिए लिंग निर्धारण के लिए प्रसव पूर्व निदान तकनीक के दुरुपयोग को रोकता है।

खुद की सम्पत्ति पर अधिकार

कोई भी महिला अपने हिस्से में आई पैतृक सम्पत्ति और खुद अर्जित सम्पत्ति को चाहे तो वह बेच सकती है। इसमें कोई दखल नहीं दे सकता। महिला इस सम्पत्ति का वसीयत कर सकती है और चाहे तो महिला उस सम्पत्ति से अपने बच्चों को बेदखल भी कर सकती है।

दहेज निरोधक कानून

दहेज प्रताडना और ससुराल में महिलाओं पर अत्याचार के दूसरे मामलों से निबटने के लिए कानून में सख्त प्रावधान किये गए हैं। महिलाओं को उसके ससुराल में सुरक्षित वातावरण मिले, कानून में इसका पुख्ता प्रबन्ध है। दहेज प्रताडना से बचने के लिए 1986 में भारतीय दण्ड संहिता की धारा 498 ए का प्रावधान किया गया है। इसे दहेज निरोधक कानून कहा गया है। अगर किसी महिला को दहेज के लिए मानसिक, शारीरिक या फिर अन्य तरह से प्रताड़ित किया जाता है तो महिला की शिकायत पर इस धारा के तहत केस दर्ज किया जाता है। इसे संज्ञेय अपराध की श्रेणी में रखा गया है साथ ही यह गैर जमानती अपराध है। दहेज के लिए ससुराल में प्रताड़ित करने वाले तमाम लोगों को आरोपी बनाया जाता है।

लिव-इन में रहने का अधिकार

सिर्फ उसी रिश्ते को लिव इन रिलेशनशिप माना जा सकता है, जिसमें स्त्री और पुरूष विवाह किये बिना पति-पत्नी की तरह रहते हैं। इसके लिए जरूरी है कि दोनों बालिग और शादी योग्य हों। यदि दोनों में से कोई एक या दोनों पहले से शादीशुदा हैं तो उसे लिव इन रिलेशनशिप नहीं कहा जायेगा। अगर दोनों तलाकशुदा हैं और अपनी इच्छा से साथ रह रहे हैं तो इसे लिव-इन रिलेशनशिप माना जायेगा। लिव-इन-रिलेशन में रहने वाली महिला को घरेलू हिंसा कानून के तहत प्रोटेक्शन मिला हुआ है। अगर उसे किसी भी तरह से प्रताडित किया जाता है तो वह उसके खिलाफ एक एक्ट के तहत शिकायत कर सकती है। ऐसे संबंध में रहते हुए उसे राइट-टू-शेल्टर भी मिलता है। यानी जब तक यह रिलेशनशिप कायम है तब तक उसे जबरन घर से नहीं निकाला जा सकता। लेकिन संबंध खत्म होने के बाद यह अधिकार खत्म हो जाता है। लिव-इन में रहने वाली महिलाओं को गुजारा भत्ता पाने का भी अधिकार है। पार्टनर की मृत्यु के बाद उसकी सम्पत्ति में अधिकार नहीं मिल सकता। लेकिन पार्टनर के पास बहुत ज्यादा प्रॉपर्टी है और पहले से गुजारा भत्ता तय हो रखा है तो वह भत्ता जारी रह सकता है, लेकिन उसे सम्पत्ति में कानूनी अधिकार नहीं है। यदि लिव-इन में रहते हुए पार्टनर ने वसीयत के जरिये सम्पत्ति लिव-इन पार्टनर को लिख दी है तो मृत्यु के बाद उसकी सम्पत्ति पार्टनर को मिल जाती है।

यदि पति-पत्नी के बीच अनबन होने के बाद अधिकार

अगर पति पत्नी के बीच किसी बात को लेकर अनबन हो जाए और पत्नी, पति से अपने और अपने बच्चों के लिए गुजारा भत्ता चाहे तो वह सीआरपीसी की धारा 125 के तहत गुजारा भत्ता के लिए अर्जी दाखिल कर सकती है। साथ ही हिन्दू अडप्शन एण्ड मेंटेंरेस एक्ट की धारा 18 के तहत भी अर्जी दाखिल की जा सकती है। घरेलू हिंसा कानून के तहत भी गुजारा भत्ता की मांग पत्नी कर सकती है। अगर पति और पत्नी के बीच तलाक का केस चल रहा है तो वह हिन्दू मैरिज एक्ट की धारा 24 के तहत गुजारा भत्ता मांग सकती है। पति पत्नी में तलाक हो जाए तो तलाक के वक्त जो मुआवजा राशि तय होती है, वह भी पति की सैलरी और उसकी अर्जित सम्पत्ति के आधार पर ही तय होती है।

बदलते परिवेश में भारतीय नारी

डॉ. सुरेन्द्र भास्कर
सहायक भू प्रबन्ध अधिकारी
सीकर (राजस्थान)
9414351564

भारतीय संस्कृति में नारी सृष्टि की समग्र अधिष्ठात्री है। स्त्री ईश्वर की एक ऐसी रचना है जो अतिसंवेदनशील एवं प्रज्ञावान है, जिसमें प्राकृतिक रूप से निर्माण की प्रवृत्ति अन्तर्निहित है। वह परिवार की धुरी है किन्तु व्यावहारिक रूप में भारतीय नारी वर्षों से ही पुरूष की दासता में अपना जीवन बिताती रही है। महिलाओं की यह स्थिति किसी एक काल-खण्ड की न होकर बदलते समय की सच्चाई है। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति उच्च थी और उनको पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। महिलाओं के संदर्भ में मनुस्मृति में अनेक उक्तियां प्रचलित हैं जैसे - *'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता'* अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। वैदिक युग में उन्हें यज्ञों में सम्मिलित होने, वेदों का पाठ करने तथा शिक्षा हासिल करने की आजादी थी। अथर्ववेद में लिखा गया है- 'जयापत्य मधुमती, वांच तदतु शान्तिवाम' अर्थात् नववधू जिस घर में जा रही है वो वहां की साम्राज्ञी है। धर्मशास्त्र काल सामाजिक एवं धार्मिक संर्कीणता का काल था इसमें महिलाओं की दशा में गिरावट देखी जाने लगी। अल्प आयु में ही उनका विवाह उचित ठहराया जाने लगा और मासिक धर्म के समय तो उसको अपवित्र वस्तु की तरह समझा जाता था। मुगलकाल में महिलाओं की दशा सबसे अधिक दयनीय थी। मध्यकाल में सामाजिक संकीर्णता की आड़ में महिलाओं पर यातनायें बढ़ने लगीं। इसी समय पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह, सती-प्रथा और देवदासी जैसी घृणित धार्मिक रूढ़ियां प्रचलन में आईं। इस काल में महिलाओं पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगा दिये गये। अंग्रेजों के आगमन के पश्चात्

महिलाओं के विषय में पहली बार सोचा जाने लगा। इस काल तक वह घर की चार दीवारी तक सीमित थी तथा पुरुष को परिवार का मुखिया समझा जाता था। इस प्रकार उन्हें किसी प्रकार के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। राजा राम मोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, महात्मा ज्योतिबा फुले जैसे समाज सुधारकों ने अपने अथक प्रयासों से अंग्रेजी हुकूमत पर दबाब डालकर अनेक सामाजिक समस्याओं के विरुद्ध कानून पास करवाये। इसके अलावा कई क्रांतिकारी महिलाओं ने भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी से समाज में अलख जगाई।

समय के कालचक्र में भारतीय नारी, देवी से दासी बन गई। उसके अधिकारों में निरन्तर कमी आने से वह पराधीन व निर्बल समझी जाने लगी। नारी की इस बदहाल स्थिति के लिए उसकी स्वयं की उदासीनता, रूढ़िवादिता, निरक्षरता, साधनों का अभाव और कठोर अनुशासन जैसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक जिम्मेदार रहे हैं। इस प्रकार भारतीय नारी की दशा हर काल में बदलती रही और उनके संघर्ष व प्रगति की राह में भी अनेक उतार-चढ़ाव आते गये। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें नारियों ने विपरीत परिस्थितियों का डटकर सामना करते हुए उन पर विजय प्राप्त की और इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया। तमाम तरह के सांस्कृतिक प्रतिबंध और पारम्परिक वर्जनाओं में फंसी भारतीय नारी समय के बदलते चक्र में कई तरह के विरोधों के बाद भी मुख्यधारा में आने के लिए वचनबद्ध रही है।

आजादी के बाद बना भारतीय संविधान महिलाओं के लिए हर प्रकार की समानता निश्चित करता है। महिलाओं की बेहतरी के लिए संविधान में अनेक प्रावधान किये गये हैं। इसके अतिरिक्त उनकी सामाजिक और

आर्थिक दशा में सुधार करने के लिए सरकार ने अनैतिक व्यापार (निवारण) अधिनियम 1956, दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961, महिलाओं का अशिष्ट रूपण (प्रतिषेध) अधिनियम 1986, सती निषेध अधिनियम 1987, घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005, बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006, कार्यस्थल पर महिलाओं का लैंगिक उत्पीड़न (प्रतिषेध) अधिनियम 2013 जैसे समय-समय पर कई कानून भी बनाये हैं। वर्तमान में राष्ट्रीय महिला आयोग महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए अपनी महश्री भूमिका का निर्वाह कर रहा है। भारत सरकार ने सन् 2001 को महिला सशक्तिकरण वर्ष घोषित किया था। राजनैतिक भागीदारी के लिए महिलाओं के लिए पंचायती राज में सीटें आरक्षित की गईं और संसद में भी ऐसा प्रावधान करने के कई प्रयास किये जा चुके हैं।

महिलाओं के क्षेत्र में सामाजिक सुधार की गति इतनी धीमी है कि इसके यथोचित परिणाम स्पष्ट रूप से अभी तक सामने नहीं आ पाये हैं। भारत में महिला सुरक्षा एवं हित रक्षा के लिए संविधान में लगभग 34 एक्ट प्रभावी हैं फिर भी यह विडम्बना ही कही जायेगी कि इतने सारे कानूनी प्रावधानों के होने के बावजूद भी महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों में कमी होने की बजाय वृद्धि हो रही है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो की 2017 की रिपोर्ट के मुताबिक देश में महिलाओं के विरुद्ध अपराध के तीन लाख साठ हजार केस दर्ज किये गये। आधुनिकता के विस्तार के साथ-साथ देश में दिन-प्रतिदिन बढ़ते महिलाओं के प्रति अपराधों की संख्या के ये आंकड़े चौंकाने वाले हैं। देश के बड़े भू-भाग विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को आज भी धार्मिक रीति-रिवाजों, कुत्सित रूढ़ियों, यौन अपराधों, लैंगिक भेदभावों, घरेलू हिंसा, निम्न स्तरीय

समाज में महिलाओं का भी अपना व्यक्तिगत अस्तित्व होता है अतः हमें उनके विचारों, भावनाओं, अनुभूतियों एवं इच्छाओं का हर संभव आदर करना चाहिए। आज पुरूषों को यह समझने की आवश्यकता है कि नारी विकास की केंद्र है और भविष्य भी उसी का है। स्त्री के सम्मान एवं सहयोग के बगैर एक सभ्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है।

जीवनशैली, अशिक्षा, कुपोषण, दहेज उत्पीड़न, कन्या भ्रूण-हत्या, सामाजिक असुरक्षा, तथा उपेक्षा का शिकार होना पड़ रहा है। इस बीच शहरी क्षेत्रों में कई उदाहरण ऐसे भी सामने आये हैं जहां महिलाओं ने अपनी सुरक्षा के लिए बने कानूनों का दुरुपयोग किया है। समाजिक संबलता हेतु बदलते भारत में महिलाओं की शिक्षा लगातार बढ़ती जा रही है, परंतु पुरुष साक्षरता दर से अब भी यह बहुत कम है।

आज नारी की स्थिति बदलती जा रही है। वह पौराणिक परम्पराओं को छोड़कर पुरुष की बराबरी करने लगी है। लंबे अरसे के अथक परिश्रम के बाद आज भारतीय महिलाएं समूचे विश्व में अपने पदचिन्ह छोड़ रही हैं। यह महज शुरुआत भर है। विगत वर्षों में उनकी सफलता इस बात की द्योतक है कि जीवन की इस दौड़ में वह पुरुषों के समकक्ष ही नहीं, बल्कि उनसे बेहतर है। संचार क्रान्ति ने हर तबके की महिलाओं को जागरूक किया है। वर्तमान में भारतीय नारी पर पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव देखा जाने लगा। अंग्रेजी शिक्षा, खान-पान एवं पहनावे ने उसकी जीवनशैली को प्रभावित किया है। फैशन के इस दौर में वह आधुनिकता के भ्रम में फंसी नजर आती है। समय के साथ मानवीय विचारों में बदलाव आया है। कई पुरानी परंपराओं, रूढ़िवादिता एवं अज्ञान का समापन हुआ है। महिलाएं अब घर से बाहर निकलकर पुरूषों के कदम से कदम मिलाकर सभी क्षेत्रों में अपनी धमाकेदार उपस्थिति दे रही हैं। अपनी मजबूत इच्छा शक्ति से आज भारतीय नारी सेना, प्रशासनिक सेवा, शिक्षा, राजनीति, खेल, मीडिया, अंतरिक्ष सहित विविध-विधाओं में अपनी गुणवत्ता सिद्ध कर कुशलता से प्रत्येक जिम्मेदारी के पद को संभालने लगी है। बदलाव की इस बयार में महिलाएं भारतीय संस्कृति का लिबास छोड़कर उन्मुक्त जीवन जीने लगी हैं।

समाज में महिलाओं का भी अपना व्यक्तिगत अस्तित्व होता है अतः हमें उनके विचारों, भावनाओं, अनुभूतियों एवं इच्छाओं का हर संभव आदर करना चाहिए। आज पुरूषों को यह समझने की आवश्यकता है कि नारी विकास की केंद्र है और भविष्य भी उसी का है। स्त्री के सम्मान एवं सहयोग के बगैर एक सभ्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। अतः खुशहाल जीवन एवं मानवता को बचाये रखने के लिए नारी के गौरव को समझकर उसे बराबरी पर लाना ही होगा। महिलाओं के बेहतरीकरण के लिए हम सबको अपनी कुत्सित एवं रूढ़िवादी मानसिकता से बाहर निकलना होगा। इसके लिए 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे नारों के साथ सरकार को ऐसे परिवार जिनमें केवल बेटियों हों, को रोल मॉडल बनाकर समाज के सम्मुख रखना चाहिए जिससे जागरूकता का स्तर बढ़ाया जा सके। स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार, ''जो जाति नारियों का सम्मान करना नहीं जानती, वह न तो अतीत में उन्नति कर सकी, न आगे उन्नति कर सकेगी।''

इस प्रकार जब तक महिलायें शिक्षित, सुरक्षित तथा संरक्षित नहीं हो जातीं, तब तक हमारा विकास अधूरा ही माना जायेगा।

मुलाकरम (Breast Tax)

अमानवीय प्रथा के विरुद्ध एक साहसी महिला की कहानी

सुरेश चंद्र
जालोर (राजस्थान)
मोबाइल-8290711762

एक कहानी है जो किसी इतिहास की पुस्तक में जगह नहीं पा सकी, परन्तु केरल के गांवों में आज भी लोकप्रिय है। यह कहानी है उन सभी शोषित महिलाओं की जिनके लिए एक समय ऐसा भी था जब राज्य का कानून ही उनके लिये अभिशाप बना हुआ था। राज्यादेश था कि निम्न जाति की महिलाएं अपने स्तनों पर कोई कपड़ा नहीं ढकेंगी और इसका उल्लंघन करने पर उन्हें राज्य को एक कर अदा करना पड़ेगा। उस अमानवीय कर का नाम था 'मुलाकरम'। जिसमें महिला के स्तन के माप व वजन के हिसाब से कर वसूला जाता था।

कहानी है त्रावणकोर रियासत (वर्तमान केरल राज्य) के एक छोटे से गाँव 'चेरथेलो' की जहाँ चिरुकनन्दन अपनी पत्नी नंगेली की साथ रहता था। जहाँ उसके समाज की सभी औरतें मुलाकरम के भय से बिना स्तन ढके अमानवीय जीवन व्यतीत कर रही थी। वहीं पर नंगेली नाम की एक महिला फैसला करती है कि वह ऐसा नरकीय जीवन नहीं जियेगी। जिस दिन नंगेली कानून का उल्लंघन करती है उसी दिन सरकारी अधिकारी चिरुकनन्दन के घर आते हैं और कहते हैं कि तुम्हारी पत्नी ने कानून को तोड़ा है, हम चेतावनी देते हैं कि अगली बार अगर ऐसा हुआ तो तुम्हें मुलाकरम देना पड़ेगा। जब नंगेली के कानों में ये आवाज सुनायी पड़ती है तो वो भागती हुई घर से बाहर आती है और सम्पूर्ण साहस जुटाकर बोलती है कि मैं अपने स्तन ढककर ही चलूँगी, इसके लिए जो भी कर अदा करना पड़ेगा मैं कर अदा करूँगी। कुपित अधिकारी एक माह के भीतर मुलाकरम अदा करने की धमकी देकर चला जाता है।

चिंता में डूबे चिरुकनन्दन को नंगेली ढांढस बँधाती है कि न तो आपको कर चुकाना पड़ेगा न ही मैं अपने स्तन ढकूंगी। बस मुझे आपसे मेरे हर कदम पर साथ निभाने का वादा चाहिए। एक आदर्श पति के रूप में चिरुकनन्दन वादा करता है कि वो अपनी अंतिम श्वास तक उसका साथ निभायेगा। आखिर वो दिन भी आ ही जाता है जब एक माह की समाप्ति पर अधिकारी नंगेली के घर पर दस्तक देता है। अधिकारी नंगेली के स्तन का माप कर मुलाकरम की राशि सुनाता है। नंगेली अधिकारी को बाहर ही रोककर कर की राशि लेकर आने का कहकर भीतर जाती है।

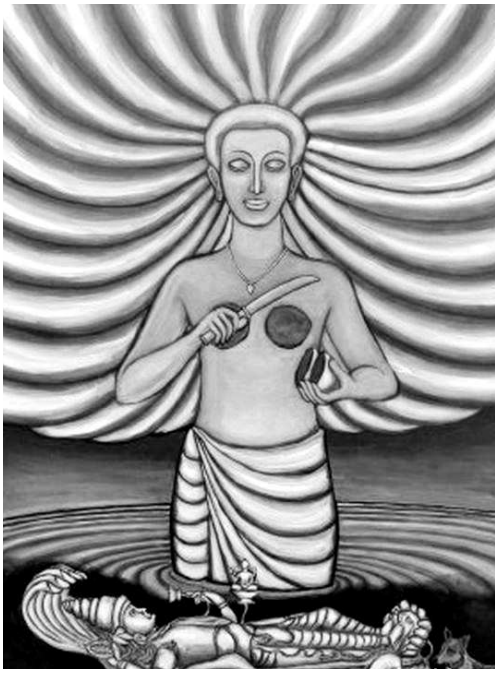

उसके बाद जो कार्य नंगेली करती है वो कोई महान और साहसी स्त्री ही कर सकती है। वो अपने दोनों स्तनों को चाकू से काटकर एक पत्तल में लेकर खून से लथपथ हालत में अधिकारी के समक्ष आकर उसके आगे पत्तल कर देती है। नंगेली कहती है कि 'जिन स्तनों पर तुम्हारा कर लगता था मैं आज उन्हीं को तुम्हें देती हूँ।' अधिकारी वहाँ से भाग जाता है।

उसी दिन अधिक रक्तस्त्राव से नंगेली की मृत्यु हो जाती है और अंतिम श्वास तक साथ निभाने का वादा करने वाला पति चिरुकनन्दन स्वयं को जीवित ही नंगेली की चिता में अर्पित कर देता है। कहते हैं वो दुनिया का इकलौता 'पुरुष सती' का उदाहरण होगा।

आज भी नंगेली का वह गाँव 'मुलचिपारम्बू' (स्तन वाली महिला का गाँव) के नाम से जाना जाता है। प्रतिवर्ष 8 मार्च को हम अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाते हैं जिसकी शुरुआत 1909 से मानी जाती है। तथ्य यह भी कि वर्ष 1924 तक त्रावणकोर रियासत में यह कर जारी था। प्रश्न यह भी है कि नारी जाति की अस्मिता के लिये अपने प्राण देने वाली नंगेली जैसी साहसी वीरांगनाओं को हम याद भी रखते हैं या नहीं। जरूरत यह भी कि हम अपने भीतर महिलाओं के प्रति सम्मान का भाव विकसित कर आने वाली पीढ़ियों तक भी इस भाव को कहानियों और कार्यों द्वारा आगे पहुचायें।

नारी
तुम्हारी कहानी
जिसे कहा है
कई किताबों ने
भरा है जिनमें अपार दर्द
और सहानुभूति को तरसती
तुम्हारी पूरी जाति की पीड़ा
परंतु
नहीं लिख पायी
कोई कलम
तुम्हारा असीम धैर्य, अदम्य साहस,
और सर्वोच्च बलिदान
जानता हूं
कि
अब भी अधूरी है
तुम्हारी कहानी
हर कहानी को
पानी ही होती है पूर्णता
कोई लेखनी
निष्पक्ष
जरूर लिखेंगी,
तुम्हारी
सच्ची कहानी
साहसी कहानी।
हमारी बेटियां
रचेंगी नये कीर्तिमान
लिखे जाएंगे जो
अमिट स्याही से
सुनहरे पन्नों पर।

हाल ही में इस विषय पर योगेश परागे ने एक सुंदर सी लघु फ़िल्म बनायी है जो इस कहानी को समझने में मदद करती है।

अंत में सिर्फ इतना ही 'कहानी तुम्हें अपनी यात्रा जारी रखनी होगी जब तक कि तुम अपने लक्ष्य को पा न लो। जानता हूँ कि यह समाज तुम्हारे पथ में अनगिनत काँटे बिछाएगा। परंतु मैं यह भी जानता हूँ कि तुम लिखी गयी हो अनवरत कही जाने के लिए, अनवरत यात्रा के लिए। तुम्हें चलते रहना है मेरे साथ-साथ। मेरे बाद भी कोई साथी मिल जाएगा तुम्हें फिर कोई मेरे जैसा।'

हकदार क्यों बदल जाते हैं?

उलझकर मनुष्य से रिश्तों में भूल गयी थी मैं अपना वो हक़, व्यर्थ तेरी ये प्रार्थना, व्यर्थ तेरी भक्ति, बर्बाद हो रही है, सारी तेरी शक्ति, शिक्षा से ही होगा तेरा काया कल्प, शिक्षा से ही होगी स्त्री तेरी मुक्ति।।

औरत और मर्द दोनों संसार की उत्पत्ति के प्रधान पहिये हैं जो नवनिर्माण के अहम कारण है शक्ति, बुद्धि, विवेक जितना पुरुष को प्राप्त हैं उतना ही स्त्री को। बावजूद इसके भारतीय समाज में पुरुष प्रधानता के कारण स्त्री अपने कांधों पर उठाए जिम्मेदारियों के बोझ तले दब के रह जाती हैं। अब उसके हक़ और अन्याय के खिलाफ लड़ने की पहल करनी चाहिए।

वह एक स्त्री है, वह सभी कालों और सभ्यताओं का प्रतिनिधित्व करती है, वह अपने अहसासों और एक परंपरा में स्थित है, बल्कि उसी के हाथों निर्मित है, यह पितृसत्ता की अतिप्राचीन परंपरा है यह स्त्री के लिए वचंना, दमन, हक़ और उत्पीड़न की परंपरा है, स्त्री अच्छी तरह जानती है और इस क़ैद से मुक्ति चाहती है। स्त्री के पास न शिक्षा थी न अधिकार था न ही कोई अवसर था उसको तो सिर्फ भोग का साधन ही समझा जाता था और समझा जा रहा है, स्त्री से उसकी मनुष्यता छीन कर उसे श्रृंगार-सामग्री या भोग वस्तु में बदल कर रख दिया है, पिता,भाई और पति की सत्ता के तहत उनके तबके और बचाव में वे फकत घर की दहलीज की खामोश सांकल से बंधी रहीं, गर्म देह और सर्द आत्मा वाली ये औरतें अपना जीवन दूसरों की देहों में जीती हैं। उसके सारे सपनों को मार के दूसरों के लिए जीती हैं, न कुछ बोलने और सोचने का भी हक़ नहीं होता, चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाती हैं अपनी जिंदगी का फैसला वह खुद नहीं ले सकती हैं, सिर्फ और सिर्फ भोग का साधन बन के रह जाती हैं, वो पुरुष से सिर्फ प्यार ही चाहती हैं और प्यार के नाम पे उसके जिस्मों के चिथड़े किए जाते हैं सदियों से ही पुरुष ने सिर्फ औरत को भोगा ही है, उसकी ज़िंदगी में क्यों बसंत ऋतु नहीं आती हैं, थक गई है स्त्री नक़ली जिंदगी, थोपी उपाधियां, मर्यादाओं और मुखौटों के बोझ से। कब उसको खुशियां मिलेंगी? अपने हक़ के लिए लड़ेगी? कब पुरुष उसको अपनी जिंदगी जीने का अधिकार देगा? कब वह खुले मन से आजाद रह पाएगी? कब कहेगी आज मैं ऊपर और आसमान नीचे? कब तक उसका हक़ छीना जाएगा ।।

आखिर कब तक.....??

मीना परमार
जयपुर, राजस्थान
mahisandesh31@gmail.com

खुद को गांधीवादी कहलवाना पसंद करने वाले गहलोत शराब ठेकेदारों की ओर से अपील पूर्व जमा राशि 75 से घटाकर 25 प्रतिशत कर देते है, बजट में इसका जिक्र तक नहीं करते और शराब कारोबारियों को अनुचित लाभ दे दिया जाता है...

राजस्थान सरकार के अविवेकपूर्ण बजट एवं नीतियों की एक छोटी-सी बानगी

राजेन्द्र सिंह गहलोत
स्वतंत्र पत्रकार
rajendra.gehlot0086@gmail.com

वर्ष 2020-21 के बजट अनुमानों में 12 हजार 345 करोड़ 61 लाख के राजस्व घाटे का बजट बनाकर और 33 हजार 922 करोड़ 77 लाख रूपये का राजकोषीय घाटा दिखाकर भी राजस्थान की कांग्रेस सरकार के वित्तमंत्री एवं मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा अविवेकपूर्ण बजट पेश करना एवं गैरजिम्मेदाराना आबकारी नीति बनाना सरकार और सरकार में बैठे मंत्रियों की अविवेकपूर्ण नीतियों को ही उजागर करता है ।

अविवेकपूर्ण नीतियों का एक कारण कार्यभार की अधिकता भी हो सकती है क्योंकि जब एक मंत्री को दो-दो पद दे दिये जाते हैं तो वह एक पद की जिम्मेदारी को भी ठीक ढंग से निभाने में असफल रहता है, लेकिन अशोक गहलोत को इसमें कोई बुराई इसलिये नजर नहीं आयेगी क्योंकि उन्होंने खुद ने भी मुख्यमंत्री के साथ ही खजाने का प्रहरी यानि वित्तमंत्री का पदभार भी खुद ही संभाल रखा है, खाली खजाने की चाबी भी किसी और को वह क्यों नहीं दे पाये इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है।

खुद को गांधीवादी कहलवाना पसंद करने वाले गहलोत शराब ठेकेदारों की ओर से अपील पूर्व जमा राशि 75 से घटाकर 25 प्रतिशत कर देते है, बजट में इसका जिक्र तक नहीं करते और शराब कारोबारियों को अनुचित लाभ दे दिया जाता है, एक तरफ शराब ठेकेदारों को कहा जाता है कि अधिक शराब नहीं बेची तो जुर्मानें के लिये तैयार रहें, साथ ही शराब के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने का नाटक भी चलता है, नाटक इसलिये कह रहा हूँ कि जनता सच में जागरूक हो गई तो शराब ठेकेदार शराब बेचेंगे किसको ? एक तरफ फाईव स्टार होटल बार की लाईसेंस फीस बढ़ाकर 30 लाख रूपये कर दी जाती है यानि मुर्गी से रोज एक सोने का अंडा नहीं चाहिये बल्कि सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को काटकर एक साथ सारे अंडे हासिल कर लेने की सरकारी योजना, अगर ये कहानी सरकार में बैठे जिम्मेदार माननीयों ने पढ़ी होती तो समझ जाते कि लालच का फल बुरा होता है न अंडे मिलेंगे, न मुर्गी । इस अविवेकपूर्ण नीति से सरकार खुद ही पर्यटन विभाग एवं उससे जुड़े क्षेत्र के लोगों को गहरा धक्का पहुंचा रही है, जिसके लिये पर्यटन मंत्री किसी तरह जिम्मेदार नहीं हैं क्योंकि इसमें उनका कोई रोल नहीं है। अब जो देशी-विदेशी पर्यटक राज्य के पांच सितारा होटल में आते थे वह दूसरे राज्यों का रुख करेंगे। इस अविवेकपूर्ण नीति के बारे में इंडिया हैरिटेज होटल्स एसोसिएशन, होटल एंड रेस्टोरेंट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान, रेस्तरां बार वेलफेयर एसोसिएशन, जयपुर होटल एसोसिएशन, फेडरेशन ऑफ हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म ऑफ राजस्थान, राजस्थान एसोसिएशन ऑफ टूर ऑपरेटर्स ने भी अपनी चिंता जाहिर की है, जो चिंता जायज है।

इसी प्रकार पत्रकारों और राज्यकार्मिकों के सिविल क्लब के लिये बार लाईसेंस की वार्षिक फीस में जिस तरह की छूट देकर नाममात्र की बार लाइसेंस फीस रखी गई है, उससे पत्रकारों और राज्यकार्मिकों के सिविल क्लब के मार्फत सरकार को कोई फायदा पहुँचे या न पहुँचे, लेकिन इससे पत्रकारों और राज्यकार्मिकों को शराब के नशे में मदहोश करने की पूरी योजना प्रतीत

होती है, और *अधिक शराब पीने के परिणामस्वरूप उनकी पत्नियां बेवा बनेंगी यह इस योजना का साईड इफेक्ट कहा जायेगा, तब नारी के पूरे परिवार को तहस-नहस करने का श्रेय कौन लेगा ?*

इसी तरह बी.डी.कल्ला को ऊर्जा मंत्री के साथ ही कला एवं संस्कृति मंत्री बना दिया, जिससे वह न ऊर्जा विभाग पर ध्यान दे पाये, न कला एवं संस्कृति विभाग पर, एक अखबार ने तो एक्सपोज भी कर दिया कि 1865 करोड़ का बिजली प्लांट 900 करोड़ में बेचने की तैयारी, जिसे वित्त विभाग ने मंजूरी दे दी और अंतिम मुहर के लिये मुख्यमंत्री बतौर वित्तमंत्री के पास भेजा गया है, गंभीर यह है कि उत्पादन निगम ने प्लांट को फिर से खुद चलाने की मंजूरी मांगी पर सरकार ने नहीं दी और निजी कंपनी को सौंपने के निर्देश दे दिये, 1300 करोड़ से ज्यादा का घाटा हुआ, फ्यूल सरचार्ज के नाम पर जनता की जेब काट कर करोड़ों वसूल लिये, पहले समस्या बढ़ाकर फिर निजी कंपनी पर मेहरबानी करना किसी बड़े स्तर पर छुपे हुए भ्रष्टाचार की ओर भी इशारा करता है।

इसी तरह विनियामक आयोग ने बिजली कंपनियों के जिस प्रस्ताव पर मुहर लगाई उससे घरेलू कनेक्शन पर सबसे ज्यादा मार पड़ने से मध्यम वर्ग के उपभोक्ताओं पर डबल बोझ पड़ा जबकि टेलिकॉम व अन्य कंपनियां केबल के लिये विभाग के खंभों का उपयोग करती है तो उनसे कोई शुल्क नहीं वसूला जाता, तो ऊर्जा मंत्री बी.डी.कल्ला ऊर्जा मंत्री के रूप में भी असफल रहे और कला एवं संस्कृति विभाग तो इनके कार्यकाल में गर्त में ही चला गया, बजट में भी स्मारकों का पुनरुद्धार, भवन का जीर्णोद्धार और अभिलेखों को ऑनलाईन करने को ही इन्होंने कला एवं संस्कृति का विकास समझ लिया, राज्य की कला एवं कलाकारों के लिये बजट में कोई स्थान नहीं है, किन आधारों पर कला एवं कलाकारों को बजट आवंटित किया जाता है वह कभी भी तय और पारदर्शी नहीं रहा इसलिये अपने अपने को रेवड़िया बांटने के आरोप लगते रहे, जो निराधार भी नहीं रहे, इसलिये बी.डी. कल्ला न तो अपने आपको अच्छा ऊर्जा मंत्री साबित कर पाये, न ही अच्छा कला एवं संस्कृति मंत्री, बल्कि इस तरह की खबरों से अपने दामन पर आरोपों के दाग और लगवा बैठे।

राजस्थान सरकार के निराशापूर्ण बजट और विवादित आबकारी नीति के ये सिर्फ उदाहरण हैं, पूरे बजट और नीतियों पर विस्तार से चर्चा की जाये तो राजस्थान की कांग्रेस सरकार की अविवेकपूर्ण नीतियों पर पूरी किताब लिखी जा सकती है।

नारी शक्ति

बबिता पाण्डेय
नई दिल्ली
chetnaupadhyay986@gmail.com

'बेशर्त जिंदगी में शर्तें हैं कितनी सारी
कहीं आँख में हैं आँसू कहीं मुख पे है लाचारी
अंदर ही घुटते रहना खुल के कभी न कहना
हर दर्द हँस के झेले हैं नाम उसका नारी'

क्या ये पंक्तियां उचित हैं! एक नारी को परिभाषित करने के लिए।

जहाँ एक तरफ हम नारी सशक्तिकरण की बात करते हैं वहाँ मेरी उपरोक्त पंक्तियां एक अपवाद मात्र हैं। पर क्या सच में ये अपवाद हैं! मुझे लगता है नहीं! क्योंकि पुरातन काल में स्त्री को शक्ति का रूप माना जाता था। माँ गौरी, सीता सावित्री, सती अनसूइया? न जाने कितने ही उदाहरण हैं। लेकिन मुगलों के आक्रमण के बाद स्त्रियों की दशा बहुत दयनीय हो गयी , पुरुष वर्ग नारियों को केवल उपभोग की वस्तु समझता थो। परन्तु समय परिवर्तनशील है और धीरे-धीरे लोगों की मानसिकता का विकास हुआ और महिलाएं भी समाज में सशक्त होने लगीं, उन्हें भी समाज का अंग समझा जाने लगा। नारी पुरुषों की अनुगामिनी मात्र नहीं रह गयी है अपितु अब वह सहगामिनी बन गई है क्योंकि अब वह कठिन से कठिन चुनौतियों का सामना करने से घबराती नहीं है।

'जय शंकर प्रसाद' जी की ये पंक्तियां नारियों की गरिमा में चार चांद लगा देती हैं -

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास, रजत-नभ-पग-तल में,
पीयूष श्रोत सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में।

फिर भी कहीं न कहीं कुछ कमियाँ तो हैं जिससे महिलाएं समाज में सुरक्षित नहीं हैं प्रतिदिन कहीं न कहीं से दुराचार ,दहेज और पारिवारिक प्रताड़ना की घटनाएं सामने आती ही रहती हैं। प्रतिदिन अनेकों 'निर्भया' के साथ दुराचार करके उन्हें सड़क पर मरने के लिए तड़पता छोड़ दिया जाता है, प्रतिदिन अनेकों 'प्रियंका' के साथ बलात्कार करके उन्हें जिंदा जला दिया जाता है और अब भी कोई कानून नारियों की स्थिति में संतोषजनक परिवर्तन नहीं कर पा रहा है।

'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।'

आप पाठक संदेश स्तंभ के अंतर्गत माही संदेश पत्रिका के बारे में अपने विचार व प्रतिक्रियाएं ईमेल या व्हाट्सएप या दूरभाष-डाक के माध्यम से प्रेषित कर सकते हैं। आपकी प्रतिक्रियाओं का प्रकाशन पाठक संदेश स्तंभ में किया जाएगा।

सादर

संपादक, माही संदेश

गर्व से कहो

'हाँ मैं हाउस वाइफ हूँ'

पूर्ति वैभव खरे
हैदराबाद (तेलंगाना)
poorti.85@gmail.com

ओह! आशा बहुत थक गई आज रीना ने माथे से टपकता पसीना पोंछते हुए कहा।

रीना- 'क्यों? आशा फालतू बात करती हो मुझसे किस बात से थक गई? दिन भर तो घर में रहती हो। मुझे देखो रोज ऑफिस जाती हूँ, तब भी नहीं थकती। आशा संकोच करती हुई बोली- रीना पर तुम तो तीन-तीन काम वालियों को लगाये हुए हो, तुम्हें घर आ कर तो कुछ नहीं करना पड़ता। तभी अचानक आशा के पतिदेव मनीष दोनों की बातचीत में बीच में ही कूद पड़े। आशा तुम क्या जानो बाहर का काम कभी किया हो तो समझो। रीना 15 हजार महिना लाती है वो भी बहुत मेहनत करके।

इत्तेफाक से मैं भी वहाँ मौजूद थी और मैं भी बहस में कूद पड़ी। रीना 15 हजार कमाती है और गँवाती कितना है, 1 हजार बर्तन वाली के,छः सौ झाड़ू पोंछा के,पाँच सौ कपड़े के,दो हजार खाना बनाने वाली के, दो हजार बच्चों के ट्यूशन के रोज आने जाने के वाहन खर्च के और न जाने कितने। रीना तब भी कुछ न कुछ बचा लेती होगी ये भी पक्का है। मगर आशा घर में रहकर जो दिन रात एक-एक पाई बचाती है उसका क्या? रीना की मेहनत काबिले तारीफ है, मैं कामकाजी महिलाओं के खिलाफ नहीं मगर एक सफल गृहणी जो पूरे घर को सुचारू रूप से चलाये वो भी किसी से कम नहीं। घर के भीतर रहने वाली गृहणी को, जो कभी लक्ष्मी कही जाती थी, सम्मान की पात्र थी, वहीं बिल्कुल उसके विपरीत स्थिति समय परिवर्तन के साथ हो गई। आज कामकाजी महिलायें समाज में अधिक सम्मान की दृष्टि से देखी जाने लगी। बदलता परिवेश कामकाजी महिलाओं को ज्यादा बेहतर समझता है, इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि आज ज्यादतर युवावर्ग कामकाजी महिलाओं से ही शादी करना पसन्द करते हैं। तुम्हें काम ही क्या है? दिन भर घर में बैठी करती ही क्या हो? अमूमन घर बैठी महिलाओं को ऐसे तानों का रोज सामना करना पड़ता है। अगर समाज कुछ न भी कहे तब भी आज की घरेलू महिलाओं को ये लगता है कि वो अन्य कामकाजी महिलाओं से कहीं न कहीं पीछे हैं। पर ये क्या बात हुई भला? आप यदि एक गृहणी हैं तो ये गर्व का विषय है बशर्ते आप अपने ग्रहस्थ जीवन में कितनी सफल हैं घर को सुचारू रूप से चलाना, परिवार का सफलता से ख्याल रखना, बच्चों को संभालना, पति की छोटी-बड़ी चीज को सहज के रखना, रिश्ते निभाना उफ! कौन कहता है हाउस वाइफ की कीमत कम है। दो हाथ और दो पैरों से वो दस हाथों और दस पैरों जैसा काम करती हैं। यदि आप एक हाउस वाइफ हैं, तो अपने हाउस वाइफ होने पर गर्व करें और पूरी निष्ठा के साथ अपने फर्ज निभायें आप सबसे बड़ा काम कर रहीं हैं। अपने को किसी भी कीमत पर कम न आंकें और अपने अंदर की छिपी हुई प्रतिभा को निखारें, क्योंकि आप में भी कोई न कोई बात है, जरूरत है तो बस खुद को पहचानने की, पैसे कमाना ही सब कुछ नहीं पैसे बचाना भी बहुत बड़ा काम है जो आप घर में रहकर बखूबी कर रही हैं। क्यों मनीष जी ठीक बोली न मैं?

आशा तो तुम गर्व से कहो कि 'हाँ मैं हाउस वाइफ हूँ'।

अपने को पहचानो

'नारी तुम असहाय,
अबला या कमजोर नहीं हो
तुमने स्वयं ओढ़ रखा है,
इतने सारे विशेषणों को
और आज तक ढो रही हो इन का बोझा।
'फेंक दो उतार कर
इन सब संज्ञा और सर्वनामों को,
उठो, अपनी शक्ति को पहचानो,
अपना आत्म-निरीक्षण करो...

'तुम तो शक्ति का भण्डार हो, तुम्हारे अंदर पुरुष से दुगुना साहस और सामर्थ्य है, तभी तो जनती हो एक मानव को....
'तुम चार गुणा अधिक सहनशील हो,
इसीलिए मुसीबतों में भी हिम्मत नहीं हारती...
** तुम्हारे अंदर छह गुणा वात्सल्य है,*
तुम आठ गुणा अधिक विद्वान हो,

तब ही तो रचती हो अपने संस्कारों से भगत सिंह, और चन्द्र शेखर जैसी संतानों को.....तुम अपने अंदर छिपा कर रखती हो,

सोलह गुणा अधिक काम शक्ति को, और बन कर रति करती हो वश में काम देव को...तुम्हारे ही अंदर छिपी हैं समस्त नौ शक्तियाँ ,

जिन्हें पुरुष पूजता है और माँगता है वरदान

साहस का .....तुम तो शक्ति हो पुरूष की, भूल गई हो क्या ,

इसीलिए भटक रही हो शोषण और स्वच्छन्दता की गलियों मे ,लगा रही हो नारे पुरूष की बराबरी के, अपने को पहचानो,तुम शक्ति हो, शक्ति कभी गुलाम नहीं होती।

डॉ. अनिता सुरभि
चंडीगढ़
anita.singh636
@gmail.com

मनीषा मिश्रा
ऋषिकेश
manishaguptta0@gmail.com

अंतर्मुखी

पीहू हां प्यार से सब पीहू ही बुलाते थे पायल को, सौम्य, साधारण पर एक आकर्षण लिए हुए जो पीहू की तरफ बरबस किसी को भी आकर्षित करता था यूं तो घर की लाडली बेटी थी पीहू पर जैसे जिद उसकी फितरत ही नहीं थी सहर्ष ही स्वीकार लेती थी सभी बातों को, छोटा सा घर का आंगन उस पर बीचों बीच अमरूद का पेड़ दादा दादी की लड़ैती कब पीहू ने इतराते गुनगुनाते मुस्कराते 14 बसंत पार किए पता ही न चला बस कभी कभी मां को ही कहते सुना लाडो बड़ी हो रही है कभी किताबों से बाहर निकल चूल्हा चौका भी झांक लिया कर कल दूसरे घर जाएगी क्या कहेंगे मां ने कुछ न सिखाया, तो दादी बोल पड़ती अरे बहू तू सारी जिंदगी औरत को करना ही क्या होवे है कलेक्टर बन कर भी बच्चे पैदा करना घर गृहस्थी की जिम्मेदारी निभाना, जब पड़ेगी सीख लेनी अभी यहां तो मर्ज़ी से जीने दे छोरी को और बस पीहू मनुहार से चिपक जाती दादी से, पीहू यूं तो खूब बोलती बतियाती पर कहीं न कहीं बहुत अंतर्मुखी थी कभी अपने मन की बात न कहती कुछ पूछो तो एक सा जवाब जो आप कहो जैसा आप कहो , 12वीं की परीक्षा की तैयारी कर रही पीहू को कभी कभी पिता जी पूछ लेते मेरी पीहू अब आगे का करेगी कछु सोचा है मोड़ी तनने , पीहू बस यही बोलती बाबा हमारे गांव में तो 12 वीं के बाद कॉलेज भी न है तो बापू कठे पढ़ाओगे बाहर भेजोगे का हमको तो हम कछु सोचें और बाबा चुप निराश सी नज़रों से बाहर चले जाते , पीहू के चेहरे पर अक्सर दर्द की एक लकीर खिंच जाती पर कभी न कहती कि क्या चाहती है, बस खाली समय पन्नों पर कुछ आकृतियां उकेरती रहती। 12वीं कक्षा का परीक्षा परिणाम आता है और पीहू 85 प्रतिशत अंकों से अव्वल आती है एक तरफ बहुत खुशी पूरे घर में वहीं पीहू कुछ कम खुश नज़र आती है, एक दिन पीहू डरते हुए बोलती है बापू कुछ कहना था, बोल छोरी इतनी घबरा काहे रही है आ मेरे पास बैठ, पीहू बोलती है बाबा मैं आर्किटेक्ट बनना चाहती हूं ,पर बाबा इन सब के लिए बाहर जाना पड़ेगा वहां रहना पड़ेगा, और बाबा खर्चा भी बहुत होगा, माहौल थोड़ा गम्भीर हो जाता है बाबा बिना कुछ बोले खाने की थाली खिसका वहां से निकल जाते हैं, उस दिन के बाद से पीहू और ज्यादा अंतर्मुखी हो जाती है चुप चुप रहना मां के साथ चूल्हा चौका देखना, मां, दादी उसके दर्द को महसूस करती, आखिर एक दिन वो दोनों ही निर्णय लेती हैं कि वो पीहू के सपनों को पूरा जरूर करवाएंगी, दादी बोलती है बहू हम अपनी पीहू को इन दकियानूसी संस्कारों की बलि नहीं चढ़ने देंगे उसको भी हक़ है सपने देखने का उनको पूरा करने का वो पीहू को बुला सब समझती हैं कि वो क्या करना चाहती है क्या उसको मालूम है कहां होती है इसकी पढ़ाई कितना खर्चा आएगा, पीहू सब बताती है पर फिर बोलती है मां ,दादी आप परेशान मत होइए कोई नहीं मैं यहीं रह कर कुछ कर लूंगी, शाम को बेटे के घर आने पर दादी आवाज़ लगाती है लल्ला तनिक बैठो पास कुछ बात करनी है, आया मां कह कर वो आ जाता है पीहू की मां भी वहीं खड़ी हो जाती है , देख बेटा पीहू आगे पढ़ना चाहवे है और मैं और तेरी बहू भी यही चाहे हैं तू ये बता कौन समस्या है जो तू छोरी के भविष्य से खिलवाड़ कररा है , मां तुम दोनों का दिमाग खराब हो गया है कोई बुद्धि है जा अनपढ़ ही रहोगी, कहां से आएगा इतना पैसा , अरे कल छोरी का ब्याह भी करना है न मां बस पढ़ ली जितना पढ़ना था और हैसियत न है मेरी ,मां गुस्से में बोलती है कोई हमारी छोरी को कम अक्ल , अनपढ़ न कहे यही चाहते हैं हम और जब पढ़ लिख जाएगी तो अपने पैरों पर खड़ी होगी तो खुद ब खुद आएंगे लोग ब्याहने छोरी को, और रही खरचा तो लडेसर मैं अपने सारे जेवर बेच दूंगी तू पढ़ा बस पीहू के पिता सोचूंगा कह कर उठ जाते हैं पर नींद कोसों दूर धीरे से उठ पीहू के कमरे में उस झांकने जाते हैं देखते हैं पीहू कागज़ पर कुछ उकेर रही है पास जा उसको निहारते हैं पीहू सकपका कर बाबा वो बाबा अरे बिटिया बहुत ही सुन्दर बनाया है तूने तो जब तू अपने मन को कागज पर इतनी खूबसूरती से उकेर लेती है तो अपने मन की बात काहे नहीं कहती अपने बाबा से क्यों नहीं करती जिद की बाबा मुझे पढ़ाओ कैसे भी ये तुम्हारी जिम्मेदारी है, काहे नहीं अपने भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए लड़ती अपने बाबा से क्यों पीहू , बेटा सुन जिंदगी का उसूल बना लो कि अपनी बात कहना सीखो रखना सीखो और बात सही है तो उसके लिए तर्क करो वितर्क करो पर अपने सपनों को रौंद मत उनमें रंग भर ताकि एक दिन दुनिया देख सके पीहू कस के बाबा से लिपट जाती है और रो पड़ती है , बहुत प्यार से पीहू की तरफ देख बाबा कहते है सुबह तैयार हो जाना शहर जाना है तेरा कॉलेज की बात करने 5 साल बाद पीहू उसी गांव में कॉलेज का नक्शा ले खड़ी होती है एक आर्किटेक्ट कॉलेज की स्थापना के लिए आज वो अंतर्मुखी पीहू धीर गंभीर ऑफिसर होती है और अपने गांव को शिक्षित करने का निर्णय ले मां दादी के सपनों को पूरा करने में लग जाती है एक मां , बहन , बेटी अगर शिक्षित होंगे तो पूरा समाज शिक्षित होगा।

'हर सफल पुरुष के पीछे एक महिला का हाथ होता है'

रीमा मिश्रा 'नव्या'
न्यू केंदा कोलियरी
पश्चिम बर्धमान (प. बंगाल)
binamishra444
@gmail.com

मैं नहीं जानती मेरा ये आलेख किसी को पसन्द आएगा भी या नहीं, कुछ तो शायद इसे बिना पढ़े ही पन्ने पलट देंगे, क्योंकि कौन इस व्यस्त जीवन में इतना लंबा भाषण सुने...। अधिकाँश महिलाएँ पारिवारिक कहानियाँ, रोमांटिक कविताएं या दुःखी किस्सों को चाव से पढ़ती हैं। एक समय था जब बेटियों को इतना पढ़ा दो कि ससुराल से मायके चिठ्ठी पत्री लिख - बांच सके। फिर बदलते फैशन के साथ समाज का ऊपरी चोला आधुनिक हो गया है । सनद रहे ऊपरी चोला कहा है। अब सभी को पढ़ी लिखी बहू चाहिए। माता पिता पर भी बेटियों को पढ़ाने का दबाव बना है ताकि उन्हें अच्छा घर और वर मिल सके। आर्थिक सहारा मिले ये सोचकर कई परिवारों की शर्त नौकरी वाली बहू की भी होती है । बेटियों को इसलिए शिक्षित किया जा रहा है कि शादी के बाद खुदा न खास्ता कोई आपदा पड़ी तो बिना पति किसी पर आश्रित न रहना पड़े। पढ़ी लिखी लड़की होने पर माता पिता को दान दहेज भी कम देना होगा। लड़कों को पढ़ी लिखी बीवी चाहिए ताकि होने वाले बच्चों को वो पढ़ा सके। लड़की की पढ़ाई का अंतिम उद्देश्य यही है कि विपरीत समय में शिक्षा हथियार बने ,पिता का दहेज बोझ कम हो ,पति के लिए अतिरिक्त वित्तीय सहारा और अनुकूल समय में बच्चों के होमवर्क करा सके।

बेटियाँ अपने सर्टिफिकेट्स और नौकरी के बल पर ससुराल पहुँचती है। 8 से 9 घण्टे की नौकरी के बाद थक कर चूर लौटने पर क्या उसे भी पुरुषों की तरह डायनिंग टेबल पर परोसी हुई थाली मिलती है? क्या कामकाजी औरतें डिनर खत्म करने के बाद जूठी थाली टेबल पर ही छोड़ गीले हाथ पोंछते हुए टीवी के सामने बैठ जाती हैं? कामकाजी महिलाएँ निश्चित रूप से दोहरा बोझ झेलती हैं। ऑफिस में काम का दबाव और लौटने के बाद बिखरी गृहस्थी को समेटना। एक समय के बाद यदि पति की आर्थिक स्थिति मजबूत हो जाए तो पत्नी का घर पर न रहना पति को असुविधाजनक लगने लगता है तो उस पर दबाव बनाया जाता है कि 'तुम्हें अब नौकरी करने की जरूरत नहीं है। मैं अच्छा खासा कमाता हूँ। तुम मजे से घर पर आराम करो। जब जरूरत थी तब तुमने कर लिया काम।'

पत्नी को नौकरी की जरूरत है या नहीं इस निर्णय का अधिकार भी पति को होता है। लोग ये कैसे भूल जाते हैं कि एक इंसान रिश्तों में स्नेह रखने के बावजूद अपने निजी सफर में भी है?? हो सकता है पत्नी को अपने कार्यक्षेत्र की चुनौतियाँ लुभाती हो ,सर्वश्रेष्ठ करके दिखाने की लालसा उसे आकर्षित करती हो और खुद को साबित करने का प्रण उसमें ऊर्जा भरता हो ।

एक शिक्षित महिला अपनी रचनात्मकता , सम्भावनाओं , कौशल और रुचियों को समेट कर रसोई, त्यौहार और राशन तक ले आती है। ये हुनर वास्तव में औरत के पास है कि अपने शैक्षणिक सर्टिफिकेट्स ,जॉब एक्सपिरेन्स सर्टिफिकेट जो उसके अतीत की गर्वीली जमापूंजी होते हैं को सलीके से फाइलिंग कर अलमारी में लॉक कर देती है। स्वयं को समझाती है कि बच्चों की सुविधा के लिए उसका घर पर रहना जरूरी है। अब उसके पति को वित्तीय मदद की जरूरत नहीं। गोया उसकी पूरी पढ़ाई , शिक्षा , सर्टिफिकेट सिर्फ एक पुरुष को 'मदद चाहिए या मदद नहीं चाहिए' के लिए ही की गई थी।

सोचिए अब उसके जीवन में क्या है??? सुबह से रात तक घर सहेजना, रसोई के राशन की लिस्टिंग करना ,वॉशिंग मशीन लगाने से पहले पूरे घर में घूम-घूम कर धोने के कपड़े ढूँढना, बाई के आने से पहले जूठे बर्तनों में पानी भरना,चाय नाश्ता , टिफिन , फ्रिज व्यवस्थित करना। रोज घर से बाहर निकलने वालों को तैयारी करके देना, शाम काम से लौटने वालों को भीतर आते ही हाथों में चीजें थमाना। सबके काम करके देने का उसको संतोष भी होता है। अपने परिवार के लिए करने में भी एक प्रकार का सुकून है। अगर थोड़ा सम्पन्न परिवार है तो महिलाओं की महीने में दो चार किटी पार्टी हो जाती हैं। कितनी ही महिलाएँ हैं जो अपनी रुचियों और हुनर को घरेलू जिम्मेदारियों में भुला बैठीं। ये सच है कि पुरुषों को भी नौकरी की जिम्मेदारी में बहुत कुछ त्यागना पड़ता है लेकिन दोनों में बहुत बड़ा अंतर है। पुरुषों को अपनी मेहनत के अनुशंषा स्वरूप प्रमोशन, अप्रेजल , बोनस , सैलरी हाइक, बेस्ट परफॉर्मर अवॉर्ड मिलते हैं। मैं उनकी इन उपलब्धियों को पैसे के रूप में बिल्कुल नहीं तौल रही है लेकिन प्रोत्साहन के छोटे स्वरूप बताते हैं कि हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं , पिछली बार से और बेहतर हुए हैं। कार्यक्षेत्र की ये उपलब्धियाँ बेहतरी की स्वीकारोक्ति हैं , एक पायदान ऊपर का प्रमाण है। ऐसी पदोन्नत्तियाँ जीवन को हौसला और प्रेरणा देती हैं।

अधिकांश घरों में महिलाओं की रुचियों को अहमियत नहीं मिलती है क्योंकि उनकी रुचियां आर्थिक दृष्टि से अनुत्पादक हैं। पुरुष बड़े अहंकार से अपने शौक बताते हैं, मुझे फोटोग्राफी का शौक है, मैं हर शाम चार घंटे चेस खेलता हूं, मुझे किताबें पढ़ने का जुनून है।

लेखन में भी महिलाओं के प्रति कमतरी का भाव या उनके प्रति दोयम दर्जा आमतौर पर देखने मिलता है। पुरुषों को लेखिकाओं से हमेशा शिकायत होती है कि इनकी लेखनी की परिक्रमा रोमांस, परिवार और सामाजिकता के घेरे से बाहर जा ही नहीं पाती। क्या भारतीय समाज एक महिला को यात्रा संस्मरण के लिए वो सुरक्षित यायावरी दे सकता है कि वो दो महीनों तक अकेली राहुल सांकृत्यायन की तर्ज पर निकल पड़े। अच्छा संस्मरण लिखना इतना आसान नहीं है कि एक होटल की खिड़की से दिखते पहाडों की सुंदरता को पन्ने पर उतार दो। अच्छा लिखने के लिए उस पहाड़ के कण कण को जीना होता है। अच्छा लिखने प्रकृति के स्पंदन को अपने भीतर धड़कते महसूस करना होता है। साहित्य उठाकर देख लीजिए कि घुम्मक्कड साहित्य रचने वालों ने महीनों पैदल पग- पग नापा, रज रज निचोड़ स्याही बनाई है। यात्रा संस्मरण लिखना मतलब उस क्षेत्र विशेष की संस्कृति , सभ्यता , खान पान को करीब से जानना और स्थानीयता को लम्बे समय तक जीना होता है। क्या हमारे पुरुषों ने औरतों को ऐसा सुरक्षित समाज नहीं दिया है कि वो लम्बी यात्राओं पर लेखन के उद्देश्य से जाए। लेखन के उद्देश्य से की गई यात्रा और पर्यटन के आनंद के लिए घूमना दो अलग चीजें हैं। क्या महिलाएं देर रात तक अंजान स्थानीय लोगों के पास बैठ उनके किस्से कहानियाँ डायरियों में इकठ्ठी करके ला सकती हैं?? अव्वल लेखिकाओं के अनुकूल परिवेश नहीं है दूसरा पूरे परिवार के सहयोग की महती आवश्यकता है।

अमृता प्रीतम के विषय में पढ़ा था कि जब वो देर रात तक लेखन करती थी तो इमरोज़ चुप एक कप चाय का उनके लिए लेकर आ जाते थे । ऐसा शायद इसलिए हुआ क्योंकि अमृता उनसे किसी रिश्ते में नही बंधी थी। अन्यथा इमरोज उनके जीवन को निश्चित रूप से नियंत्रित करते । क्या इसलिए ही महान लेखिका महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, तस्लीमा नसरीन, अरुन्धती रॉय, कृष्णा सोबती जैसी लेखिकाओं ने अपनी कलम पर पुरुष दम्भ के बोझ को रखने से इनकार कर एकाकी जीवन जीने का निर्णय लिया?

मैं पूरे भरोसे से कह सकती हूँ कि पुरुष यदि इतिहास, पुरात्तव, राजनीति, यात्रा संस्मरणों पर सागर जितनी स्याही खाली कर सकता है तो एक महिला अमूर्त कोमल भावनाओं को अक्षरों में जिस तरह ढाल सकती है वैसी जादूगरी पुरुष शायद ही दिखा पाए। घर परिवार के भीतर की ढँकी कहानियाँ, रिश्तों की कारीगरी, अबोले को लिपिबद्ध करने का जादू तो एक लेखिका ही कर सकती है। प्रकृति ने यदि पुरुष को शारीरिक रूप से शक्तिशाली बनाया है तो क्षतिपूर्ति के रूप में महिलाओं को मन पढ़ने की विलक्षण दक्षता दी है।

यकीन करिए समाज यदि उसे सार्थक संवाद की सहभागिता से बाहर करेगा तो वो दिमाग पढ़ना सीख लेगी, नीयत सूंघने खुद को प्रशिक्षित कर लेगी, खामोशी के श्रवण का कौशल विकसित कर लेगी। लेखिका अपनी अलग दुनिया एक औरत की नजर से रचेगी। आप उसके लिए घर की दहलीज का सीमा निर्धारण करोगे वो आँगन में गिल्लू, नीलकंठ ढूंढ लेगी । पारिवारिक सम्बन्धों की गीली मिट्टी से 'आपका बंटी' , 'मित्रो मरजानी' गढ़ लेगी। अभी हाल ही में मैंने अरुंधति जी के उपन्यास 'गॉड ऑफ स्माल थिंग्स' को पढ़ा इस उपन्यास को पढ़ने के बाद अरुन्धती के नारीत्व पर गर्व हुआ। लम्बे समय बाद दिमाग को सही खुराक मिली। यह उपन्यास जवाब है महिलाओं की बौद्धिकता पर संदेह करने वालों को। कहने वाले ने बहुत सोच समझ कर कहा है कि 'हर सफल पुरुष के पीछे एक महिला होती है।' सफल पुरुष के पीछे खड़ी वो महिला ही है जो अपने परों को खुद काट कर उस पुरुष के सपनों पर से जिम्मदारियों का बोझ हल्का कर उन्मुक्त परवाज देती है...।

समाचार पत्र/पत्रिका माही संदेश (मासिक)
फार्म नं. 4 (नियम 8 देखें)

1.	प्रकाशन स्थान	जयपुर
2.	प्रकाशन अवधि	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	रोहित कृष्ण नंदन
	नागरिकता	भारतीय
	पता	50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021
4.	प्रकाशक का नाम	रोहित कृष्ण नंदन
	नागरिकता	भारतीय
	क्या विदेशी हैं?	नहीं
	पता	50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021
5.	सम्पादक का नाम	रोहित कृष्ण नंदन
	नागरिकता	भारतीय
	क्या विदेशी हैं?	नहीं
	पता	50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार व हिस्सेदार हों।	रोहित कृष्ण नंदन 50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर- 302021

मैं रोहित कृष्ण नंदन एतद् घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक **1 मार्च, 2020 जयपुर**

ह. रोहित कृष्ण नंदन
प्रकाशक के हस्ताक्षर

अशिक्षा से मुक्ति का ध्येय ले चल पड़ी- लवलीना सोगानी

हम सब जीवन में शिक्षा के महत्व से परिचित हैं और खुशनसीब भी कि हमें हमारे जीवन में ज्ञान प्राप्त करने की सुविधाएं और सुअवसर मिले। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आज भी देश में कई बच्चे शिक्षा के इस मूलभूत अधिकार से वंचित हैं और हमारे देश में खासकर लड़कियां। विमुक्ति संस्था ने शिक्षा के मूलभूत अधिकार से वंचित गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले परिवारों की लड़कियों को शिक्षित करने का जिम्मा उठाया है। इस संस्था की नींव रखने वाली मौजूदा सचिव लवलीना सोगानी से माही संदेश के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन व सह संपादक ममता पंडित की विशेष बातचीत...

विमुक्ति गर्ल्स स्कूल की स्थापना

लवलीना सोगानी ने बताया कि उनकी परवरिश एक सम्पन्न और आधुनिक ख्यालों वाले परिवार में हुई। उस ज़माने में भी उनके माता-पिता ने अपनी दोनों लड़कियों को समान अवसर दिए।

संस्था की शुरुआत कैसे हुई? ये पूछने पर वे बताती हैं कि एक दिन सुबह अपने बेटे को दूध का गिलास देते हुए उन्होंने अपनी चौकीदार की बेटी को पास खड़ा पाया। तो उन्होंने उससे पूछा कि तुम दूध क्यों नहीं पीती हो? उसका जवाब सुन कर वो दंग रह गईं , क्योंकि वह लड़की बोली 'मैं नहीं पीती भाई को मिलता है क्योंकि वह स्कूल जाता है'। इस एक घटना के बाद ये सवाल उनके मन में घर कर गया कि लड़की को स्कूल क्यों नहीं भेजा जा रहा और इसी विचार से जन्म हुआ विमुक्ति गर्ल्स स्कूल का। सन 2004 में मात्र 25 लड़कियों से शुरू हुए विमुक्ति संस्था के इस स्कूल में आज 600 से अधिक लड़कियां हैं।

चुनौतियां

गरीबी रेखा के नीचे रह रहे परिवारों को अपनी लड़कियों को स्कूल भेजने के लिए तैयार करना एक बहुत चुनौती थी। लवलीना सोगानी और उनकी टीम ने बेटियों को स्कूल भेजने के लिए समुदाय को समझाया। पहले लड़कियों को या तो घरेलू स्तर पर मदद के लिए मजबूर किया जाता था या घर पर रहकर भाई-बहनों की देखभाल की जाती थी जबकि माता-पिता काम पर जाते थे। लेकिन जैसे ही लड़कियों ने पढ़ना और लिखना सीखा, अपने माता-पिता को गणितीय गणना और समाचार पत्र /पत्रिकाएं पढ़ने में मदद की, माता-पिता को लड़की की शिक्षा के महत्व का एहसास हुआ और उनकी संख्या बढ़ने लगी।

एक और बड़ी चुनौती थी वित्तीय सहायता। छात्राओं की बढ़ती संख्या के साथ साथ संस्था को और अधिक आर्थिक मदद की आवश्यकता थी। भारत में कुछ दान दाताओं की मदद से संस्था अपना कार्य कर रही थी लेकिन वह काफी नहीं था।

महत्वपूर्ण मोड़ EduGirls Inc, USA

विमुक्ति संस्था की वित्तीय सहायता संबंधी समस्या हल हुई जब वर्ल्ड बैंक के पूर्व अधिकारी आनंद सेठ भारत आए और उन्होंने इस संस्था के द्वारा किए गए कार्यों का जायजा लिया और काफी प्रभावित हुए। उन्होंने संस्था की मदद करने की ठानी और अमेरिका स्थित EduGirls Inc, USA जो स्वयं उनके द्वारा चलाया जा रहा एक एनजीओ है की तरफ से संस्था को सहयोग करना शुरू किया। उनकी कोशिशों के परिणाम स्वरूप आज अमेरिका में स्थित करीब 60 से 70 लोग संस्था के लिए दान देते हैं। आनंद सेठ स्वयं भी जब भारत आते हैं विमुक्ति गर्ल्स स्कूल आकर छात्राओं से मिलते हैं।

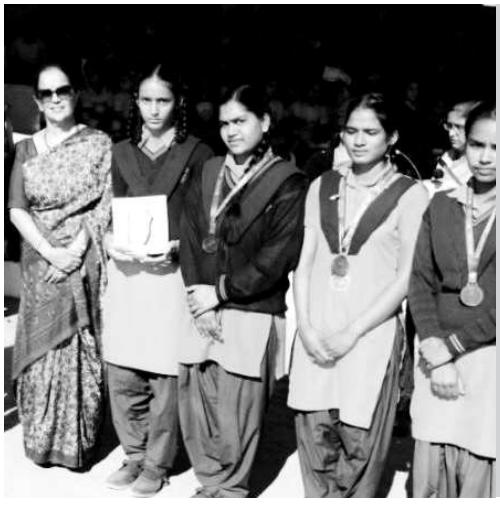

गरीबी रेखा के नीचे रह रहे परिवारों को अपनी लड़कियों को स्कूल भेजने के लिए तैयार करना एक बहुत चुनौती थी। लवलीना सोगानी और उनकी टीम ने बेटियों को स्कूल भेजने के लिए समुदाय को समझाया।

प्रवेश प्रक्रिया व सुविधायें

स्कूल की मौजूदा प्राचार्या प्राची जैन ने बताया कि विमुक्ति गर्ल्स स्कूल की प्रवेश प्रक्रिया में सभी आवेदकों के घरों का भौतिक सर्वेक्षण शामिल है। यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि प्रवेश पत्र में दी गई जानकारी वास्तविक है और प्रत्येक आवेदक 100,000 रुपये से कम वार्षिक पारिवारिक आय के मानदंड को पूरा करता है। परिवार का औसत आकार 5 सदस्य है। स्कूल राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध है। न केवल लड़कियों को मुफ्त शिक्षा, बल्कि मुफ्त किताबें और स्टेशनरी, वर्दी, जूते, बैग, नाश्ता, दूध और परिवहन भी प्रदान करता है। इसके अलावा स्कूल में विज्ञान और गणित प्रयोगशाला, कंप्यूटर लैब, मैथ्स लैब 'बारबरा बुक क्लब' तथा स्मार्ट क्लास की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

सेटेलाइट सेंटर

विमुक्ति गर्ल्स स्कूल दूसरे स्कूल के परिसर में दोपहर की पाली में चलता है। इसलिए, उन्हें दैनिक आधार पर छात्रों के साथ सीमित समय मिलता है। छात्राओं के साथ ज्यादा वक्त बिताने के उद्देश्य से संस्था ने झुग्गी बस्ती के करीब एक केन्द्र (satellite center) स्थापित किया है। वर्तमान में वहां कक्षा VI के छात्रों के लिए अंग्रेजी, मुखर संगीत और कराटे पर सत्र आयोजित किये जाते हैं। उसी परिसर में प्री-प्राइमरी सेक्शन भी शुरू किया है। उन्हें छात्रों की मजबूत नींव बनाने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, चूंकि केंद्र बस्तियों के करीब है, इसलिए माता-पिता के साथ बातचीत करना और समुदाय से जुड़ा होना आसान होगा।

व्यावसायिक प्रशिक्षण

विमुक्ति का मिशन न केवल वंचित लड़कियों को शिक्षा प्रदान करना है, बल्कि उन्हें सम्मानजनक रोजगार हासिल करने में भी मदद करना है।

साप्ताहिक कैरियर परामर्श सत्र आयोजित किए जाते हैं और छात्राओं को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। जिन पाठ्यक्रमों का समर्थन किया जाता है वे छात्राओं की रुचि और कौशल जैसे नर्सरी शिक्षक प्रशिक्षण, चिकित्सा सहायक प्रशिक्षण, कंप्यूटर पाठ्यक्रम आदि पर निर्भर करते हैं। पाठ्यक्रमों की अवधि 6 महीने से दो वर्ष तक है। यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाता है कि लड़कियों को उनके संबंधित पाठ्यक्रमों के पूरा होने के बाद नौकरी मिले।

सफर के साथी

एक छोटे से ख्याल से शुरू हुए सफ़र ने आज एक संस्था का रूप ले लिया है। इस संस्था में यह सभी लोग सामंजस्य बिठाकर काम करते हैं। संस्था के मौजूदा अध्यक्ष शैलेंद्र अग्रवाल, कोषाध्यक्ष मनीषा गौतम व सलाहकार श्यामा माथुर संस्था द्वारा किए गए कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मौजूदा प्राचार्य प्राची जैन व उनके साथ ही स्कूल का पूरा स्टाफ पूरी मेहनत, लगन और समर्पण से इन छात्राओं की देख-रेख करते हैं।

बदलाव की बयार

विमुक्ति संस्था ने अपने इन प्रयासों से सिर्फ इन लड़कियों की नहीं अपितु समाज के बदलाव की कहानी लिख दी है। लवलीना सोगानी बताती हैं अब इन छात्राओं के माता-पिता परीक्षा परिणाम पर अंगूठा नहीं लगाते बल्कि अपना नाम लिखते हैं और ये देखकर उन्हें आत्मिक खुशी मिलती है। एक और घटना का जिक्र करते हुए वे कहती हैं कि स्कूल की लड़कियों ने मिलकर एक नुक्कड़ नाटक तैयार किया है जो उन बस्तियों में जाकर प्रस्तुत करती हैं जहां से लड़कियां कम आती हैं। उस नाटक के जरिये कई और लड़कियों ने स्कूल में आना शुरू किया है।

छात्राओं को अपना लक्ष्य मिल गया है उनमें से कई बड़े होकर टीचर बनना चाहती हैं और इसी स्कूल मैं कार्य कर करना चाहती हैं। लवलीना सोगानी भावुक होकर कहती हैं यही हमारी उपलब्धि है कि आज हमारी ये छात्राएं हमारे साथ आकर खड़ी हैं, हमारे इस प्रयास में सहभागी हैं।

सहयोग करें

आप भी विमुक्ति संस्था की इस मुहिम का हिस्सा बनें। इन छात्राओं की शिक्षा के माध्यम से समाज के उत्थान के इस कार्य में सहयोग करें।

https://vimukti.org.in/

नीरज गोस्वामी की कलम से

नीरज गोस्वामी
जयपुर, राजस्थान
मो. 98602-11911

क़फ़स भी हैं हमारे और ज़ंजीरें भी अपनी हैं
युगों से क़ैद हम अपनी ही दीवारों में बैठे हैं
मुश्किलें ही मुश्किलें हैं रात-दिन इसको
काट कर इस जिस्म से सर को कहीं रख दे
जानती थी कि तेरे बाद उजड़ जाऊँगी
मैंने फिर भी तिरा हर रंग छुड़ा कर देखा
फिर बदन उसको दे दिया वापिस
रूह जब से निखार ली हमने
फिर लगा तेरी छुअन में अजनबीपन सा
तुझमें कोई और भी रहने लगा है क्या

आप ईश्वर या कोई भी अदृश्य शक्ति जो हमें चला रही है को मानें न मानें ये आप पर है। इस बात पर कोई बहस नहीं लेकिन आप एक बात तो जरूर मानेंगे कि इस शक्ति ने अपने द्वारा सृजित इंसानों में हुनर की एक नदी को प्रवाहित किया है। ये नदी सतत बहती रहती है। कुछ लोग इसे सतह पर ले आते हैं और ये सबको दिखाई देने लगती है लेकिन कुछ ऐसा नहीं कर पाते। ख़ास तौर पर आधी दुनिया की नुमाईंदगी करने वाली महिलाओं के लिए अपने में छिपे हुनर की नदी को सतह पर लाना इतना आसान नहीं होता। समाज और घर की जिम्मेदारियां एक बाँध की तरह इस नदी के प्रवाह को रोक लेते हैं। कुछ में हुनर की ये नदी समय के साथ सूख जाती है और कुछ में इसके लगातार प्रवाहित होते रहने से बाँध का जलस्तर बढ़ने लगता है, साथ ही बढ़ता है बाँध पर दबाव। कुछ बाँध इस दबाव से टूट जाते हैं, कुछ रिसने लगते हैं और कुछ के ऊपर से नदी बहने लगती है।

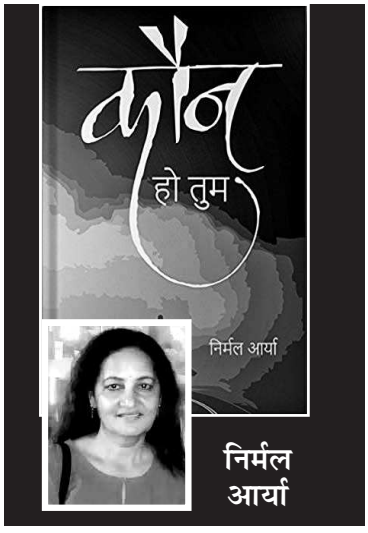

उम्र भर का साथ है कुछ फासले रख दरमियाँ
दूरियां कर देंगी यूँ दिन-रात की नज़दीकियां

मर्द की बातों में आकर, चाहतों के नाम पर
औरतों ने फूंक डाले औरतों के आशियाँ
आँख में चुभने लगी है अपने घर की चांदनी
जुगनुओं की चाह में हो?
क्या हो बदकिस्मत मियाँ !! ये जो शेर आपने ऊपर पढ़े हैं, यकीन मानिये कोई औरत ही लिख सकती है, पुरुष की सोच यहाँ तक पहुँच ही नहीं सकती। हमारी आज की शायरा हैं 'निर्मल आर्या' जिनकी ग़ज़लों की अद्भुत किताब 'कौन हो तुम' की बात हम करेंगे। निर्मल जी ने विपरीत परिस्थितियों में भी अपने हुनर की सरिता को सूखने नहीं दिया। निर्मल जी को ये तो इल्म था कि कुछ है जो उनके मन के अंदर ही अंदर घुमड़ता है लेकिन उसे व्यक्त करने की विधा का उन्हें जरा सा भी भान नहीं था। बाँध की मज़बूत दीवारों से उनके हुनर की नदी टकराती और लौट जाती। आखिर वो दिन आया जब बाँध में हलकी सी दरार पड़ गयी। पानी का रिसाव पहले बूँद बूँद हुआ फिर एक पतली सी धार बनी और फिर हुनर झरने के पानी सा झर झर झरने लगा। हर विपरीत परिस्थिति इस दरार को चौड़ा करने लगी। लबालब भरे बाँध में आयी इस दरार को भरना अब नामुमकिन था।

यूँ हसरतों ने आजमाए मुझपे जम के हाथ
फिर पूछिए न मुझसे भी क्या क्या खता
हुईबेचैनियाँ बहुत थीं बरसने से पेशतर
बरसी जो खुल के जिस्म से हलकी घटा
हुईशब् भी विसाल की थी मुहब्बत भी थी जवां
मुझसे मगर न फिर भी कोई इल्तिजा हुई

उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के छोटे से गाँव दोघाट में जन्मीं निर्मल एक चुलबुली मस्त मौला लड़की थी। उम्र के उस हसीन दौर में जब गुलाबी सपनों की आमद शुरू होती है याने 16 वें साल में जब वो बाहरवीं कक्षा में पढ़ ही रही थीं, निर्मल जी शादी के बंधन में बंध गयीं। अपना घर छूट गया, स्कूल छूट गया और वो संगी साथी छूट गए जिनके साथ वक्त पंख लगा के उड़ा करता था। शादी हुई तो धीरे धीरे घर परिवार सामाजिक जिम्मेदारियों का बोझ भी बढ़ने लगा। पति और परिवार के स्नेह ने उन्हें हिम्मत दी और वो जी जान से अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने लगीं। बाँध जरूर बंध गया था लेकिन अंदर चलने वाली नदी सूखी नहीं थी लिहाज़ा वक्त के साथ बांध का जलस्तर तो बढ़ा ही और उसके साथ ही बहने का रास्ता न मिल पाने के कारण मन में बेचैनी भी बढ़ने लगी।

ये रात होते ही चमकेंगे चांदनी बनकर
जो साये धूप के दिनभर शजर में रहते हैं
हमें सुकून कि ज्यादा किसी से रब्त नहीं
उन्हें गुरूर कि वो हर नज़र में रहते हैं
कभी भी दिल से कहीं गलतियां नहीं होतीं
खराबियों के जो कीड़े हैं सर में रहते हैं

बेचैनियां अभिव्यक्ति का माध्यम

ढूंढने के लिए छटपटाने लगीं। कभी वो कहानियों का सहारा लेतीं तो कभी कविताओं का और तो और खुद को व्यक्त करने के लिए उन्होंने फैशन डिजाइनिंग से लेकर घर भी डिजाइन किये। खूब वाह वाही बटोरी। नाम भी मिला प्रशंसकों की तादाद में बेशुमार इज़ाफ़ा भी हुआ लेकिन मन की बेचैनी का मुकम्मल इलाज़ वो नहीं ढूंढ पायीं। 8 मई 2014 की गर्म दुपहरी थी जब उन्होंने अनमनी सी अवस्था में एक कहानी लिखने की सोची, थोड़ा बहुत लिखा फिर फाड़ के फेंक दिया। अचानक एक कविता की कुछ पंक्तियाँ उनके दिमाग में बिजली सी कौंधी उन्होंने उसे फ़ौरन कागज़ पर उतारा और घर वालों को सुनाया, घर वालों ने सुन कर तालियां बजाईं। हिम्मत बंधी तो उसे फेसबुक पे डाल दिया। जैसा कि फेसबुक पर अक्सर होता है, प्रशंसा करने वालों का ताँता लग गया। फिर तो ये सिलसिला चल निकला। एक दिन उनकी किसी पोस्ट पर किन्हीं सुभाष मालिक जी का कमेंट आया जिसमें कहा गया था कि निर्मल जी आप बहुत खूब लिखती हैं लेकिन अगर इसे बहर में लिखें तो आनंद आ जाय।

वो मुझको भूल गया इक तो ये गिला ,उस पर
मुझे पुकारा गया नाम भी नया ले कर
पहन ले या तो चरागों की रौशनी या फिर
वजूद अपना तपा धूप की क़बा लेकर
मुझे तो रात की अलसाई सुब्ह प्यारी है
ये कौन रोज़ चला आता है सबा लेकर

बहर? चौंक कर निर्मल जी ने सोचा। ये किस चिड़िया का नाम है? सुभाष जी से संपर्क साधा गया तो उन्होंने फेसबुक पर चलने वाले ग्रुप 'कविता लोक' का पता दिया जहाँ ग़ज़ल लेखन सिखाया जाता था। कविता लोक ने निर्मल जी का वो काम किया जो 'खुल जा सिम सिम' ने अलीबाबा का किया था। ख़ज़ाने की गुफ़ा का दरवाजा खुल गया। फिर तो सिर्फ बहर ही क्यों गज़ल की बारीकियां भी निर्मल जी समझने लगीं रफ़्ता रफ़्ता ग़ज़ल कहने भी लगीं। एक नये सफर की शुरुआत हो चुकी थी। जैसे जैसे वो आगे बढ़ती गयीं वैसे वैसे उनका मार्ग दर्शन करने लोग आगे आने लगे सुभाष जी से शुरू हुआ ये सिलसिला विजय शंकर मिश्रा जी जो उनके सबसे बड़े आलोचक रहे और जिन्होंने उनकी हर इक ग़ज़ल में गलती निकाल कर उसे दोष मुक्त किया से होता हुआ सईद जिया साहब तक और फिर आखिर में उर्दू अदब के जीते-जागते स्तम्भ और अदबी मर्कज़ पानीपत के आर्गेनाइज़र जनाब डा.कुमार पानीपती जी पर समाप्त हुआ।

खिड़की पर ही हमने रख दी हैं आँखें
क्या जाने कब चाँद इधर से गुज़रेगा
ऐसे छू ,बस रूह मुअत्तर हो जाए
मिटटी का ये जिस्म कहाँ तक महकेगा
आखिर कब तक थामे रक्खेगी 'निर्मल'
दिल तो दिल है ,ज़िंदा है तो मचलेगा

बेहद दिलकश आवरण में लिपटी ये किताब जिसमें निर्मल जी की 100 से अधिक ग़ज़लें संगृहीत हैं ,दूर से ही पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इस किताब को पाने के लिए आप पराग जी से 9971698930 पर संपर्क करें। ये किताब अमेजन पर भी ऑन लाइन उपलब्ध है। निर्मल जी को इन लाजवाब ग़ज़लों के लिए 9416931642 पर फोन कर बधाई भी दें। और अब आखिर में पढ़िए निर्मल जी की उस ग़ज़ल के चंद शेर जिसे उनसे हमेशा फरमाइश करके बार बार सुना जाता है और जिसने डॉ. कुमार जैसे ग़ज़ल पारखी को भी हैरान हो कर दाद देने पर मज़बूर कर दिया था।

बूँद का रक्स आग पर देखो
जान जाओगे इश्क क्या शय है
कह रहे हैं ख़ुदा के क़ातिल भी
ज़र्रे-ज़र्रे में अब भी है ! है ! है !
हाथ में किसके है कोई लम्हा
वक्त हर शय का आज भी तय है।

तस्वीर बोल उठी-24

तस्वीर : राजेश कुमार सोनी

इस तस्वीर को देखकर आपके मन में जो भाव उमड़ रहे हैं बस उन भावों को काव्य भाषा की चार पंक्तियों में लिख डालिए। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को माही संदेश के अगले अंक (अंतिम तिथि 20 मार्च) में प्रकाशित किया जाएगा-

तस्वीर बोल उठी-23

रचना भेजने का पता

संपादक माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर- 302021(राजस्थान)।
email-mahisandesh31@gmail.com

तस्वीर बोल उठी-23 के अन्तर्गत काफी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई सर्वश्रेष्ठ रचना को यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रीत की गलबहियां डाले
नैनों के छलके हैं प्याले
अपूर्व मिलन की आस लिए
खो गए एक दूजे में ये मतवाले

उषा वर्मा
'वेदना'
जयपुर (राज.)

आधी आबादी

चुप चुप रहकर कोई जुल्म नहीं हम अब सहने वाली।
आधी आबादी हैं सुन लो मौन नहीं रहने वाली।।

जकड़ी रही बेड़ियां सदियों, बस सहती आघात रही
कैदी थी आंसू-पीड़ा की, हालातों से मात रही
बदल गया परिदृश्य दिखाई ,देता आज नया आगाज
सपनों के कुछ पंख लगाकर, हमने आज भरी परवाज।

नित नव-नव प्रतिमान गढ़ेंगी नव उड़ान भरने वाली।
आधी आबादी हैं सुन लो, मौन नहीं रहने वाली।।

नहीं समझना नारी दुर्बल, अबला है, बेचारी है
वो तो पुरुषों के अभिमानी कानूनों की मारी है।
हाथ कृपाण-कटारी लेकर तनी है अब उसकी भृकुटि
नहीं बख्श सकती उसको ,जो पापी अत्याचारी है।

द्वार लाँघ कर निकल पड़ी हैं, कहीं नहीं रुकने वाली।
आधी आबादी हैं सुन लो, मौन नहीं रहने वाली।।
लक्ष्मीबाई हो,रजिया हो, चाहे हो इंदिरा गाँधी
है इतिहास इन्हीं से रौशन, बनकर रही सदा आँधी।
सानिया, मेरीकॉम, साइना, साक्षी, दीपा कर्माकर
सभी क्षेत्र में सफल हुई हैं, भाग लिया जिसमें बढ़कर।

लक्ष्य हमेशा भेद सकेंगीं, कभी नहीं थकने वाली
आधी आबादी हैं सुन लो, मौन नहीं रहने वाली।

सीमाओं पर वीरों के, काँधे से काँधे मिला सकें,
भारत माँ पर आँख तरेरे, उसकी गर्दन उड़ा सकें।
जो घुसपैठ करे भारत में, उसका सत्यानाश करें
देश-द्रोह जो करे ढूँढकर, उसका आज विनाश करें।

सिर पर कफ़न बाँध निकलीं हैं, देश पे मर मिटने वाली।
आधी आबादी हैं सुन लो ,मौन नहीं रहने वाली।।

शेफालिका झा
समस्तीपुर बिहार
shephalika359
@gmail.com

नारी तू कोमल है, कमज़ोर नहीं

कोमल कपास का सूत उंगलियाँ काटता कई बार है
मत भूल नारी तू सृष्टि का आधार है, ईश्वर का विश्वास है ।
और बिन तेरे तो किसी रात की भोर नहीं
नारी तू कोमल है कमज़ोर नहीं।।

कहीं बादल रिमझिम बरसाते कहीं बरसाते मूसलाधार हैं ,
दीप टिमटिमाता कहीं प्रकाशमान,
कहीं कभी लपटें बनकर मचाता हाहाकार है।
तू जल बिंदु सी सरल निर्मल ,पर तेरी लहरों का कोई तोड़ नहीं
नारी तू कोमल है कमज़ोर नहीं।।

जिस चाँद को पूजती है तू करवाचौथ के व्रत-उपवास में ,
उस चाँद पर पहुँच चुकी है तू अपने ही दम और विश्वास पे।
तू संस्कार सींचती है आस्था संजोकर,
तेरे जड़-बल का कोई छोर नहीं
नारी तू कोमल है कमज़ोर नहीं ।।

तू हवा बसंती ,तू ही प्रचंड वेग तूफान है
पावन सौम्य शारदा तू, कहीं काली पहने मुंडमाल है।
तू कदम बढ़ा और आगे बढ़ अँधियारी घनघोर नहीं
नारी तू कोमल है कमज़ोर नहीं।।

तू जौहरी है माला में पिरोती परिवार है
अन्नपूर्णा होकर भी भूखी रहती कई बार है।
जीवनपर्यन्त तेरे संघर्षो का ,जननी कोई मोल नहीं
नारी तू कोमल है कमज़ोर नहीं ।।

गूँथ अंतर्मन के द्वन्द को अरे! इतिहास भरा पड़ा है
रानी लक्ष्मीबाई की वीरगाथा को हर बच्चे ने पढ़ा है।
सीता, राधा, मीरा का ,यूं ही दुनिया में शोर नहीं
नारी तू कोमल है कमज़ोर नहीं।।

हर शगुन तुझसे तू तो मंगलगान है
वेदों और पुराणों में भी ,तेरी महिमा का बखान है।
तेरी ममता पाने को जन्मे राम-कृष्ण ,कारण कोई दूजा और नहीं,
नारी तू कोमल है कमज़ोर नहीं
नारी तू कोमल है कमज़ोर नहीं।।

रजनी मूंधड़ा
कोलकाता (प. बंगाल)
rajanimundhra1981
@gmail.com

नारी

मकान को घर
घर को स्वर्ग बनाती है,
यूं ही नहीं नारी
नारायणी कहलाती है।

मौत से जा टकराती
पीड़ा में भी मुस्कराती,
देने को नया जीवन
जीवन अपना दांव लगाती,
तब नारी सृजनकर्ता
और जननी कहलाती है।

मां बन बचपन थामती
बन पत्नी जीवन सम्हालती,
आता जब जीर्ण बुढ़ापा
बन बेटी सिर सहलाती,
थाम लेती है जब वक्त की डोर को
तब नारी शक्ति कहलाती है।

कुमारी रौशनी
समस्तीपुर (बिहार)
raushanitk37
@gmail.com

नज़र या नज़रिया

नज़र से देखो,
मगर नज़रिया तो बदलो
नारी है वो,
उसे सामान तो न समझो।
है अगर हुस्न की मलिका,
तो है वो माँ रूप भी
है अगर वो द्रौपदी,
तो है काल का स्वरूप भी
ना समझो उसे लाचार,
थोड़ा तो बदलो अपने विचार।

सुरुचि सिंह,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
suruchi0211
@gmail.com

आत्मसम्मान

डरना नहीं, तुम्हें लड़ना है,
पर किस से,
ये जो चार लोग हैं आसपास
पर ये तो कोई भी नहीं हैं
हैं,सिर्फ चाबी वाले गुड्डे,
असली लड़ाई तो खुद से,
अंदर की डरी सहमी रूह से है

जो अपने अनुमानों से
सारे तराजू तोल लेती है...
जो आइने में चेहरा नहीं देखती
देखती है लोगों की नज़रों से
अपने रंग रूप, अपने पहनावे को
अपने लक्ष्य में उसे तंज कसने वाले
लोगों के शब्द कंकर से लगते हैं...

व्यर्थ सोच विचार कर क्यों
खुद ही पीड़ा सहती हो?
तुम्हें कोई कन्धा क्यों देगा?
कोई तुम्हारा बोझ क्यों सहेगा?
तुम दया के लिए कब तब हाथ
फैलाओगी?
तुम औरों को छोड़ खुद में बदलाव
कब लाओगी?

तुम विद्या हो जानती हो!
तुम शक्ति को पहचानती हो!
तुम जननी हो जग तारती हो!
फिर क्यों डर के पक्षी
मन के पिंजरे में पालती हो,
खोलो द्वार तुम इस पिंजरे के
भर लो उड़ान तुम जी भर के ...

सम्मान करो खुद का तुम
सम्मान तभी मिल पायेगा,
वरना डर के गर बैठ गई
तो देश भी पिछड़ा रह जायेगा...।

नेहा गुलाटी
चंडीगढ़
nehagulati138
@gmail.com

'नारी शक्ति का वंदन होना चाहिए'

पथ हो प्रगति का और
साथ हो नारी का ,
सहयोग और समर्पण द्वारा
दुर्गमता में उपलब्ध
सफलताओं का
मंथन होना चाहिए

नारी शक्ति का वंदन होना चाहिए ।

भूलकर अस्तित्व अपना जो
मानव का कल्याण करें
तन मन से सृष्टि का
पूर्ण विकास करे
उस विशाल ह्रदयमयी
ममता की दुर्दशा पर
चिंतन होना चाहिए

नारी शक्ति का वंदन होना चाहिए ।

जकड़ी है बेड़ियां
कांटों का तार है
उस पर चलना अनवरत
क्षुब्ध स्वाभिमान है
इस संकीर्ण मानसिकता का
खंडन होना चाहिए

नारी शक्ति का वंदन होना चाहिए ।

भीगती पलकों पर
नेह धारा लुटा दो
अरमानों को रोंदती
हवाओं को विराम दो
देवी स्वरूपा
नारी की मुस्कान से
धरा को चंदन होना चाहिए

नारी शक्ति का वंदन होना चाहिए।

सुमन जीत कौर
वैशाली नगर,
जयपुर , (राजस्थान)
sjkr.0107@gmail.com

घर की चारदीवारी...

घर की चारदीवारी से
बाहर निकलकर
चूल्हे चौके के कार्य को
दरकिनार कर-कर
इस दुनिया का
दीदार कर रही हैं
हाँ अब लड़कियाँ
आगे बढ़ रही हैं।।

अब जरूरत नहीं है इनको
किसी के सहारे की
बात बात पर अपनों के
सामने हाथ फैलाने की
वे तो अपने सपनों की
ऊंची उड़ान भर रही हैं
हाँ अब लड़कियाँ
आगे बढ़ रही हैं।।

रूढ़िवादी जालों को
साफ कर-कर
भेदभाव के पदचिन्हों से
बेअसर होकर
आशाओं की एक नई
लौ जला रही हैं
हाँ अब लड़कियाँ
आगे बढ़ रही हैं।।

पुरुषों के कंधे से कंधा
मिलाकर चल रही हैं
पिता के बुढ़ापे की
लाठी बन रही हैं
जीने की एक नई
राह खोज रही हैं
हाँ अब लड़कियाँ
आगे बढ़ रही हैं।।

बेखौफ हो सड़कों पर
निकल रही हैं
गाड़ी की मेन सीट पर
सिर्फ लड़कियां ही दिख रही हैं
खोलकर पन्ने ख्वाहिशों के
हवा से बातें कर रही हैं
हाँ अब लड़कियाँ
आगे बढ़ रही हैं।।

नेहा शर्मा
अलवर, राजस्थान
sharmaneha7832@gmail.com

स्त्री जीवन

पेसेन्जर ट्रेन सा है
स्त्री का जीवन।
एक सूत्र में
बांधकर जो रिश्तों को
बढ़ाती है धीरे-धीरे
गन्तव्य की ओर अपना कदम।।
जिस तरह
इंजन और डब्बे
जुड़े होते हैं आपस में
भावनात्मक रिश्तों के साथ
स्त्री भी
ठीक उसी तरह
जुड़ी होती है
संबंधों के साथ
चूल्हा-चौका से
लोक-लाज के साथ।

पुरुषों की आशाएँ
उनकी आकांक्षाएं
एक स्त्री के प्रति जिज्ञासाएँ
सारा कुछ समाहित है
एक स्त्री के हृदय में।

और उनका
अपना अस्तित्व
जीवित है तब तक
जब तक उनमें
शक्ति है सहने की
समझने की समझदारी है
और शोषण के विरुद्ध
कुछ न बोलने की वफादारी।।

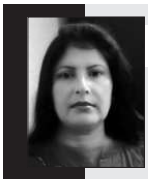

अंशु आँचल सिंह
पूर्णियाँ (बिहार)
anshusinghsarsi68@gmail.com

स्वेटर बुनती महिलाएं

ऊन के धागों के संग
बुनती जाती हैं फंदा-फंदा
प्यार दुलार और सपने
जब भी सिलती हैं ये कपड़े
सिलती हैं जीवन के सुख और दुख
कभी शौक तो कभी विवशता में।
अक्सर हँसती खिलखिलाती स्त्री
डूबी होती है वेदना के अथाह सागर में,
और चुनती रहती है
सीप, मोती, कंकड़ आशा और विश्वास के
जिनसे फुरसत के क्षणों में
बनाती है नायाब कलाकृतियाँ
ऐसे वह जी लेती है अपना मनचाहा जीवन।
तदोपरांत उन कलाकृतियों को
रंगती और सजाती है घर की दीवार पर,
ताकि जब-जब देखे
उसे जीवन लगे सुंदर और प्रवाहमान,
विविध उपनाम देती दुनिया को क्या पता
कितना मुश्किल होता है...
खंडित स्वप्नों को जोड़कर
बना डालना कोई मुकम्मल सी कृति,
जिसमें समाहित हों
जीवन को विविध आयामों को अभिव्यक्त करते
रंग खुशबू और अर्थ।

साधना कृष्ण
वैशाली (बिहार)
sadhna.lalganj@gmail.com

औरतें

एक वक्त था जब औरतें
जुल्म सहती चुपचाप सी
अपने कामों में व्यस्त
अग्नि की तपन में झुलसती
सहमी सी मासूम औरतें
जुल्मों के दायरों में बंधी थी
मगर अब वक्त बदल गया है
वक्त से बहुत आगे हैं अब औरतें
मुश्किल है अब उनको समझना
चुपचाप सब कुछ सहना
कभी वक्त आने पर
दुर्गा का रूप रखना
बुलंद आवाज उठाना
वो न रुकी न ही उनके कदम
चल पड़ी है अपनी राहों पर
नर-नारी का बराबरी का
दर्जा पाना पुरुषों से
कंधे-से-कंधा मिलाकर चलना
आज नारी बदल चुकी है
अब बहुत आगे बढ़ रही हैं औरतें
उन औरतों को सलाम
जिन्होंने देश में अपना
नाम कमाया फिर चाहे
शिक्षा के क्षेत्र में हो या
सामाजिक, राजनीति, या
खेल जगत में भी महिलाओं का
काफी रहा है योगदान
सजदे से झुकता है
जिनके आगे सर।

सुमन अग्रवाल 'सागरिका'

आगरा (उत्तर प्रदेश)
sumanagarwal2617@gmail.com

मुझे ये ख्याल आया...

अभी अचानक मुझे ये ख्याल आया
कि तुमसे पुछूं -
तुम मुझे कितना प्यार करती हो?
मैं दिमाग पर जोर डालकर
याद करने की कोशिश करता हूँ
मगर याद नहीं आता कोई ऐसा दिन
जब तुमने मुझे प्यार न किया हो

मछलियां तालाब के जल में
एक साथ घूम रही हैं
आम के गिरे हुए मंज़रों के बीच से
चींटियों का झुंड
पंक्तिबद्ध होकर गुजर रहा है
बकरियां खा रही हैं घास
और मेमने उछल कूद
कर रहे हैं आसपास
बुधवार के हाट से सौदा लिये
थकी हारी लौट रही हैं मेरे गांव की
महिलाएं।

मछलियों ने तालाब से
चींटियों ने दूसरी चींटियों से
मेमनों ने बकरियों से
और सौदा लेकर लौटती औरतों ने
अपने घरवालों से कभी नहीं पूछा कि
तुम मुझे कितना प्यार करते हो
तो फिर मैं तुमसे कैसे पूछूं
कि तुम मुझे कितना
प्यार करती हो!

मोहन कुमार झा

(हिन्दी विभाग, बीएचयू)
मो.- 7839045007

जो तुम मुझे समझे तो फक्र करोगे कि मैं नारी हूँ ...

मैं समंदर किनारे की वो रेत हूँ
जो लहरों का उबाल झेल के भी
शिथिल है
मैं आसमान में चमकता वो तारा हूँ
जो सूरज की आग झेल के भी
रौशन है ...
जो तुम मुझे समझे तो फक्र करोगे
कि मैं नारी हूँ ...

मैं भले ही बेफिक्री के लिबास में रहूं
पर फिक्र की सलवटें मुझमें भी हैं
जो मैं दिखाती नहीं ...
मैं भले ही आंसू बहा दूँ कभी
पर सब्र का एक बाँध मुझ में भी है
जो मैं जताती नहीं ...
जो तुम मुझे समझे तो फक्र करोगे
कि मैं नारी हूँ ...
मैं वो हूँ जिसने रिवाज़ों के चलते
अपने ही ख्वाबों के तानों बानों को
बिखरते हुए देखा है ...
मैं वो हूँ जिसने बंदिशों की जंजीरों
के चलते अपनी ही उड़ानों में अपने
ही पंखों को कटते देखा है...
पर फिर भी मैं वो हूँ ....
जो अपनी हसरतों को दबाकर भी
लबों पर हंसी रख ले
जो तुम मुझे समझे तो फक्र करोगे
कि मैं नारी हूँ .....
पर मुझे कम न समझना ..
मुझ में दर्द का गुबार है तो तूफान
सा उबाल भी है ...

मुझ में शीतल जल सी लहरें हैं तो
मुझ में क्रोध की मशाल भी है ....
तो मुझे कम न समझना ...

क्योंकि जो तुम मुझे समझे तो फक्र
करोगे कि मैं नारी हूँ ...।

प्रिया राठौड़

जयपुर (राजस्थान)
rathore19.priya@gmail.com

'हाँ स्त्री हूँ मैं...'

जब जन्म लिया सृष्टि ने
उदय हुआ था सूर्य यहां
तब पल्लवित हो उठे पुष्प
और गूंजती हो गयी धरा

तब मैं बन कर एक लता सी
अवतरित हुई इस धरा पर
ले मधुर मुस्कान अधर पर
प्रेम राग का उद्घोष किया।

माना हूँ कोमल तन से मैं
पर जलन है हृदय में एक
नहीं हूँ पथिक पथ का मैं
मैं तो खुद ही क्षितिज हूँ।

स्वर तरंगित मुझसे है
गीत और शब्दावली
मेरे ही यह सब नाम हैं
मैं ही स्नेहिल संजली।

मुझसे ही यह स्वर्ग है
मुझसे ही है नर्क बना
हर वाणी की व्यंजना भी मैं
हर स्वर मुझसे सजा।

हूँ कुशल मैं कौतुकी
पर बन गई हूँ नर्तकी
बह रही सरिता सी मैं
क्यों बांध कर मुझे रखा।

हूं हव्य की घृति मैं
यज्ञ का द्रव्य भी हूँ
हूँ विद्यमान आकाश में
मेघ की राशि भी मैं।

हूँ सघन दाहक भी मैं
जल रही हूं अग्नि बन
संचरित कर आक्रोश को
बन गई पावक भी मैं।

व्याप्त हूँ कण कण में मैं
हूं ज्ञान का प्रकाश मैं
मिथ्या का जाल भी
सारे जग में मैंने बुना।

हूँ पवन बन चल रही
है तूफान मुझमें बसा
कर रही हूं निर्माण मैं
इस सम्पूर्ण समाज का।

हाँ स्त्री हूँ मैं...।

दिव्या राकेश शर्मा
गुरुग्राम (हरियाणा)
sharmawriterdivya@gmail.com

मैं भारत की वो नारी हूँ...

मैं दर्द-वेदना सहती हूँ
मुझमें मीरा की भक्ति है
मेरे आगे झुकते हैं सिर
मुझमें दुर्गा की शक्ति है ।

मैं दया-प्रेम का सागर हूँ
मुझसा कोई अवतार नहीं
संसार अधूरा है मुझ बिन
बिन मेरे जीवन सार नहीं ।

हूँ वसुंधरा सी सहनशील
है त्याग-तपस्या नस-नस में
जड़-जगत नियंता मेरे बिन
क्या नहीं मनुज मेरे बस में ?

मैं अबला या कमजोर नहीं
दुश्मन के लिए चिंगारी हूँ
तलवारों से जो लड़ी कभी
मैं भारत की वो नारी हूँ ।

योगिता 'ज़ीनत'
जयपुर (राजस्थान)
neha.sharmaa29@gmail.com

पृथ्वी पर जन्मी है जो

महिला है वह कहलाई
वह उष्णा है, ऊर्जा है,
प्रकृति है, शिला जैसी अडिग है,
है कौन वही तो है नारी।।
आंचल में जिसके है वात्सल्य, प्रेम, स्नेह भरा
हर रिश्तों में हर नातों में उतरना ही है उसे खरा।।
धूप है, पानी है, बिजली है
तो कहीं ममता का सागर और कहीं
चिंगारी है नारी।।
मां की ममता है इन्हीं में, है बहन का प्यार भी,
है कहीं नन्ही सी बेटी और कहीं अर्धांगिनी।।
प्रेम है, संवेदना है, आस्था-विश्वास है,
हिला के रख दे इस 'मही' को
है वही तो 'महिला' और नारी।।

मंजूश्री राव
ओड़िशा
manjushri.vedula@gmail.com

लड़कियां

बासमती की भीनी खुशबू सी, होती हैं प्यारी लड़कियां
पहले बाबुल, फिर पिया का, हैं घर सजाती लड़कियां
खुशी हो या गम हर हाल में जीना कोई इनसे सीखे
जिंदगी जीने का सलीका, सभी को समझाती लड़कियां
पहले बालिका फिर जवान और आखिर में बूढ़ी होकर
बहन, बेटी और मां का किरदार निभाती लड़कियां
हालात अगर मजबूर करें तो फटती हैं बम की तरह
'धीर' जुल्म नहीं सहतीं अब, नए दौर की ये लड़कियां।।

डॉ. जवाहर धीर
पंजाब
9872625435

नारी हो तुम नारी का सम्मान करो

नारी हो तुम नारी का सम्मान करो
पल पल मत उसका अपमान करो।
तुमसे अधिक समझ सकेगा न कोई और उसे,
बात बेबात मत उस पर घात प्रतिघात करो।
ऊंच-नीच, अमीर-गरीब सब स्त्री मन एक है,
मन वचन से मत उस पर ठेस करो।
प्रेम से सहज ही दुनिया जीती जा सकती है,
सब के भीतर प्रेम, उल्लास भरो।
खून के ही नहीं प्यार के रिश्ते भी हो सकते
हैं सगे, उन्हें दिल से कबूल करो।
तुम्हारी ही तरह है सब को स्वाभिमान प्यारा,
उस का सदा आदर और आरक्षित करो।
आवेग ईर्ष्या यह भयावह भयंकर डायन है,
मत पास फटकने दो जल्दी खुद से दूर करो।
बंध जाती गाँठ अक्सर छोटी-छोटी बातों से ही,
मिल सुलझा लो समय में शंका सब दूर करो।
शांति सुख की कुंजी है सुख से ही समृद्धि है,
सरलता से सब बातों का हल करो।
मत जलो पर अन्याय अत्याचार की ज्वाला में
अब और अधिक तुम हे नारी!
अधिकार रक्षा हेतु बुलन्द अपनी आवाज करो।
इतिहास में नारी गाथा पढ़-पढ़ कर ही मत
इतराओ, यथार्थ में भी ज़रा झांको गौर करो।
अलग अलग, भावना के विभेद से ये जो
हम सब बंटी पड़ी हैं,
उन्हें मिलाओ पास लाओ एक करो।
मजबूत बनो,खुद को जोड़कर औरों को जोड़ो,
वैमनस्यता के धरातल को एक समान पाटकर,
मजबूत सुन्दर कोई नमूना इमारत खड़ी करो,
फिर जहान में पुरुषों की बराबरी करने वाली,
सशक्त आदर्श नारी होने का तुम दम्भ भरो।।

इन्दु तोदी,
धरान, (नेपाल)
todiindu@gmail.com

मैं नारी हूं

मैं मैं हूं, कोई देवी नहीं
चांद सी सुंदर कोई मूर्ति नहीं
कोई खिलौना नहीं
जो मन भर जाने पर सिर्फ घर
की शोभा बढ़ाए
जीती जागती हाड मांस से बनी
इस सृष्टि का हिस्सा हूं
मैं में हूं कोई देवी नहीं
मैं त्याग की मूर्ति नहीं
समर्पण की कीर्ति नहीं
मैं नारी हूं, एक सहज नारी
एक निश्छल नारी
जो चाहती है सिर्फ
अपनी पहचान अपना अस्तित्व
अपने हिस्से का
खुशियों से भरा आसमां
मैं मैं हूं कोई देवी नहीं...।

गरिमा राकेश गौतम
कोटा राजस्थान

'नारी है तू'

नारी है तू सबसे प्यारी, है तू
प्रेम, समर्पण की कहानी, है तू
कोमल हृदय सी सीता, है तू
प्रेम में डूबी राधा, है तू
सावित्री सा विश्वास, है तू
लक्ष्मी बाई सा साहस, है तू
हर युग की एक नई कहानी, है तू
नारी, है तू सबसे प्यारी, है तू
इस युग में भी, चुप मत रह तू
द्रौपदी सी आवाज बन तू
पद्मावती सी आग बन तू
नहीं बने कोई और निर्भया
इसलिए काली बन तू
रख हौसले बुलंद तू
अभिमान है तू अभिमान बन तू
नारी है तू सबसे प्यारी है तू।।

शिल्पा पूनिया
बीकानेर (राजस्थान)
shilpu1994@gmail.com

कमाना, अपना औरत होना

अनुपमा तिवाड़ी
जयपुर राजस्थान
anupamatiwari91@gmail.com

कभी मत पालना यह भ्रम
कि तुम देवी हो, तुम शक्तिस्वरूपा हो,
तुम रोक सकती हो मौत को भी
यदि ऐसा होता तो तुम,
बलात्कार रोक पातीं तुम,
हत्याएं रोक पातीं
परन्तु ऐसा नहीं हुआ न
होता भी नहीं है
उन्होंने इन विशेषणों से तुम्हें बहलाया
और तुम बहल गईं?
मानो अपने को कि तुम हाड़-मांस की
औरत से ज्यादा कुछ नहीं हो
ये चमकीले, लुभावने विशेषण
जो तुम्हें मिले हैं
लौटा दो इन्हें, आओ मैदान में और कमाओ,
खुद्दारी से, अपना औरत होना।

आज की नारी

क्या है आज की नारी ?
कहीं अत्याचार को सहती नारी
तो कहीं प्यार से सहजी नारी

कहीं क्रोध की ज्वाला है नारी
तो कहीं नूर की डोर है नारी

कहीं अबला है नारी
तो कहीं काली का रूप है नारी

कहीं दफ्तर में बैठी नारी
तो कहीं बाल मजदूरी करती नारी

जब-जब आती है
त्याग समर्पण की बारी
तब-तब त्याग समर्पण को
पार करती नारी

जब आती है अपनों पर
विपदा की बारी
तो खुद हर लेती विपदा सारी।।

इस तरह चलती नारी के दो रूप हैं
इन दो रूपों का नाम ही है नारी
जिन रूपों में झुलसती हर
इक नारी है
उन रूपों का नाम ही है नारी।।

माधवी अग्रवाल
आगरा (उत्तर प्रदेश)
editormahisandesh@gmail.com

स्त्रीत्व

वह अकेली उदास अपने कमरे में बैठी एकटक बाहर निहार रही थी। परिवार के दबाव में पति ब्याह तो लाया था उसे, पर शादी की रात ही उसे छोड़ प्रेमिका के साथ रहने चला गया था।

सास ने नसीहत की पोटली उसके दामन से बाँध दी थी– '*पति छोड़ गया तो क्या, तू ब्याहता औरत है, मर्यादा में रहना होगा।*'

तब से आज तक अपनी स्त्रियोचित इच्छाओं और संवेदनाओं को मार सबकी सेवा कर रही थी। बाहर लाल फूलों से परिपूर्ण टेसू की डालियाँ जैसे एक-दूसरे के साथ आलिंगनबद्ध हो मुस्कुरा रही थीं। भँवरे कलियों पर डोल रहे थे। हवा में फूलों की मादकता बिखर रही थी। पास के कमरे से देवर-देवरानी की चुहुल की आवाजों से उसके चेहरे पर उदासी के रंग गहरा रहे थे।

देवर के मित्र एक बार फिर से सवाली बन बाहर आँगन में आ खड़े हुए थे। सासू-माँ ने गुस्से में लाल हो उन पर अपने व्यंग्य-बाण बरसाने शुरू कर दिए। उसने हिम्मत की और कमरे से बाहर निकल आई। अमित का हाथ थाम उसने घर की देहरी तक कदम बढ़ाए ही थे कि सासू-माँ की गुस्से भरी आवाज गूँजी, 'रुक जा बहू! शर्म कर, किसी की ब्याहता है?'

'किस बात की शर्म? अमित ने तो हाथ माँगा है मेरा आपसे और किसकी ब्याहता बता रही हैं मुझे? उसकी, जो पहली रात ही अपनी प्रेमिका के साथ रहने चला गया।'

'वो पुरुष है और तू स्त्री! मर्यादा और पवित्रता का पालन करना तेरा धर्म है।' सास की रौबीली आवाज गूँजी।'

'माँ जी! एक उम्मीद के साथ बहुत दिनों तक कर लिया मर्यादा का पालन। अब तो मेरे लिए अपने स्त्रीत्व की रक्षा ही सब से बड़ा धर्म है। मर्यादा का पाठ अपने बेटे को पढ़ाना था।'

और वह अमित का हाथ पकड़ देहरी पार कर गई।

डॉ. उपमा शर्मा
यमुना विहार दिल्ली
dr.upma0509@gmail.com

रोशन करती हूं जहां

मीना सोनी
अजमेर
राजस्थान
meenasyk@gmail.com

मैं दिन हूं रात नहीं
जग में उजियारा करती
अंधकार नहीं।

मैं आवाज हूं राग नहीं
हक के लिए लड़ती हूं
किसी की मोहताज नहीं।

मैं हकीकत हूं सपना नहीं
जो सोचा, पूरा करती
अधूरी ख्वाहिश नहीं।

मैं नदी हूं दरिया नहीं
अपनी गति में बहती हूं
रुकती नहीं।

मैं किरण हूं, कंचन नहीं
रोशन करती हूं जहां
सजती नहीं।

मैं काया हूं माया नहीं
करती हूं सपने साकार
जादू टोना नहीं।

'मौसम आया है रंगीन' सुलोचना चव्हाण

शिशिर कृष्ण शर्मा
फिल्म इतिहासकार
मो. 9821394486

1947 का साल भारत के ही नहीं बल्कि हिन्दी फिल्मोद्योग के लिए भी बेहद उथलपुथल भरा साबित हुआ। बंटवारे के बाद कई फिल्मी हस्तियां पाकिस्तान चली गयीं तो कई कलाकारों को पाकिस्तान छोड़कर भारत आना पड़ा। इस उथल-पुथल ने नए कलाकारों के लिए भी उर्वर जमीन तैयार की और कलाकारों की इस नयी पीढ़ी ने बहुत जल्द हिन्दी सिनेमा की शक्ल बदलकर रख दी। खासतौर से फिल्म संगीत पर तो बदलाव के इस असर को साफ देखा जा सकता है। रफी, किशोर, तलत, लता, आशा, गीता आदि नयी पीढ़ी के गायक-गायिकाओं को भी सही मायनों में आजादी के बाद ही खुद को साबित करने के सही मौके मिले। इन्हीं गायक-गायिकाओं में शामिल थीं सुलोचना कदम जिन्होंने साल 1947 में बनी फिल्म 'कृष्ण-सुदामा' से पार्श्वगायन के क्षेत्र में कदम रखा था।

खुशकिस्मती से सुलोचना जी आज भी स्वस्थ और सकुशल, हमारे बीच हैं और दक्षिण मुम्बई के गिरगांव इलाके में रहती हैं। 30 दिसंबर, 2014 की शाम अपने घर पर हुई मुलाकात के दौरान उन्होंने 'बीते हुए दिन' के साथ विस्तार से बातचीत की।

मूलत: रायगढ़ जिले के रहने वाले सुलोचना कदम के पिता दक्षिण मुम्बई के फारस रोड इलाके के एक कारखाने में काम करते थे और मां गृहिणी थीं। दो भाई और दो बहनों में छोटी सुलोचना जी का जन्म 13 मार्च, 1933 को गिरगांव-मुम्बई के फणसवाड़ी में हुआ था। सुलोचना जी कहती हैं, 'मैंने मराठी माध्यम के स्कूल से चौथी तक पढ़ाई की। पढ़ने में जरा भी मन नहीं लगता था। तख्ती लेकर स्कूल जाती थी और रोज मनाती थी कि स्कूल की बिल्डिंग गिर जाए। लेकिन गाने का मुझे बेहद शौक था। घर में ग्रामोफोन था जिस पर रेकॉर्ड लगाकर, सुन-सुनकर गाती थी। वो सभी मराठी रेकॉर्ड थे। संगीत की परम्परागत शिक्षा मैंने कभी नहीं ली, जो कुछ सीखा, सुनसुनकर सीखा'।

गणेशोत्सव के दौरान मराठी बहुल इलाकों में छोटे-छोटे बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे जिन्हें 'मेला' कहा जाता था। सुलोचना जी और उनकी बड़ी बहन शकुंतला के अलावा वत्सला देशमुख और विजया देशमुख नाम की दो बहनें भी इन कार्यक्रमों में अनिवार्य रूप से हिस्सा लेती थीं। सुलोचना जी बताती हैं, 'देशमुख बहनें पास ही के भुलेश्वर के इलाके में रहती थीं। उनके पिता मेरे बड़े

भाई के परिचित थे। उन्होंने भाईसाहब से आग्रह किया कि उनकी बेटियों को कुछ भी नहीं आता, उन्हें सिखाएं। भाईसाहब के कहने पर वो दोनों 'मेले' की रिहर्सल्स में आने लगीं और जल्द ही 'मेलों' में हिस्सा लेने लगीं। बड़ी होकर वत्सला देशमुख मराठी फ़िल्मों की एक जानीमानी अभिनेत्री बनीं तो विजया देशमुख ने 'दो आंखें बारह हाथ', नवरंग', 'झनक झनक पायल बाजे' और 'सेहरा' जैसी फिल्मों में संध्या के नाम से काम किया और फिर वी.शांताराम से शादी कर ली'।

'मेला' के कार्यक्रम श्री दातार लिखते थे। उन्होंने फिल्म 'बसंत' में (बेबी) मधुबाला के गाए गीत 'मेरे छोटे से मन में छोटी सी दुनिया रे' का मराठी रूपांतरण किया था जिसके बोल थे, 'किती वना तो फुललिया सुरेख कली का या'। 'मेले' में सुलोचना जी के गाए इस मराठी गीत को दर्शक बेहद पसन्द करते थे। सुलोचना जी बताती हैं, 'एक रोज हमारे मेकअपमैन दांडेकर जी मुझे संगीतकार श्यामबाबू पाठक से मिलाने उनके माधवबाग स्थित निवास पर लेकर गए। उन दिनों पाठक जी की फ़िल्म 'कृष्ण-सुदामा' फ्लोर पर थी। पाठक जी ने मुझे कुछ पंक्तियां गाकर सुनाईं और उन्हें दोहराने को कहा, जो मैंने किया। मेरा गायन पाठक जी को बेहद पसन्द आया। और इस तरह 'कृष्ण-सुदामा' से मेरे पार्श्वगायन के करियर की शुरूआत हुई'।

सुलोचना जी की आवाज में रेकॉर्ड होने वाला पहला गीत था 'मैं तो सो रही थी, बंसी काहे को बजाई'। इसके अलावा फिल्म 'कृष्ण-सुदामा' में उन्होंने एक और गीत गाया, 'है नशे में चूर, प्याली हाथ में'। ये दोनों सोलोगीत थे। फ़िल्म 'कृष्ण-सुदामा' साल 1947 में रिलीज हुई थी। इसके बाद श्यामबाबू पाठक ने सुलोचना जी से साल 1947 में ही बनी अपनी अगली फ़िल्म

'किस्मतवाली' में दो गीत गवाए। सुलोचना जी के मुताबिक़, इन गीतों से पहचान बनी तो कई अन्य संगीतकार भी उन्हें गाने के लिए बुलाने लगे।

1940 के दशक के उन आख़िरी 4 सालों में सुलोचना जी ने नंदराम ओंकार जी, रशीद अत्रे, ज्ञानदत्त, अजित मर्चेंट, सी.रामचन्द्र, मुश्ताक़ हुसैन और चेतूमल, प्रेमनाथ, पी.रमाकांत, एम.ए.रऊफ़, एस.के.पाल, रामनाथ वाधवा, अविनाश व्यास, के.नारायण राव जैसे संगीतकारों के निर्देशन में 'जंगल में मंगल', 'पारो', 'चन्दा की चान्दनी', 'दुखियारी', 'लाल दुपट्टा', 'नाव', 'रिफ़्यूजी', 'बचके रहना', 'बॉम्बे', 'सुनहरे दिन', 'अलख निरंजन', 'बाबूजी', 'बसेरा', 'भीष्म प्रतिज्ञा', 'दुश्मनी', 'हंसते रहना', 'हर हर महादेव' और 'हंसके जियो' जैसी फिल्मों में करीब 50 गीत गाए। निर्माता-निर्देशक और अभिनेता हरिश्चन्द्र राव कदम की फिल्म 'रिफ्यूजी' में उन्होंने हरिश्चन्द्रग राव की बहन का रोल भी किया था। ये फिल्म साल 1948 में बनी थी।

उसी दौरान सुलोचना को ऑल इंडिया रेडियो पर भी गाने के मौक़े मिलने लगे तो वो नियमित रूप से जालन्धर, इन्दौर, जयपुर और कश्मीर स्टेशनों पर भी गाने लगीं। उधर नाटकों में अभिनय का सिलसिला भी शुरू हो चुका था। सुलोचना जी बताती हैं, 'ईद के दिनों में बॉम्बे थिएटर हॉल में नाटक 'लैला मजनूं' का मंचन होने जा रहा था। 'मेला' के मेकअपमैन दाण्डेकर के जरिए मुझे मजनूं (कैस) के बचपन के रोल के लिए बुलाया गया। लोगों को मेरा अभिनय बेहद पसन्द आया। फिर मैंने सगीर भाई के निर्देशन में 'चांदबीबी' में अंजुमन की भूमिका की। इन नाटकों ने मेरी उर्दू में ज़बर्दस्त सुधार किया। उधर गुजराती नाटक 'चालीस करोड़' में भी मैंने नायिका की भूमिका की।'

सुलोचना जी के गाए गीतों-ग़ज़लों की कई प्राईवेट अलबमें भी जारी हुईं। साथ ही वो स्टेज शोज़ में भी हिस्सा लेने लगीं। वो कहती हैं, 'मैंने जयपुर में हुए एक कार्यक्रम में हिस्सा लिया जिसमें हरेक गायक-गायिका को एक भजन, एक गीत और एक ग़ज़ल गानी थी। जैसे ही मैं गाकर मंच से नीचे उतरी तो देखा सामने अख़्तरी बाई (बेगम अख्तर) खड़ी थीं। उन्होंने आगे बढ़कर मुझे गले लगा लिया। बेहद ताज्जुब के साथ उन्होंने मुझसे पूछा, 'बेटी तुमने उर्दू किससे सीखी'? और जब मैंने उन्हें बताया कि मैंने जो कुछ भी सीखा सुनसुनकर सीखा तो वो और भी ताज्जुब में पड़ गयीं।'

साल 1951 में बनी फिल्म 'ढोलक' के गीतों की जबर्दस्त कामयाबी ने सुलोचना जी को एक नयी पहचान दी। श्यामसुन्दर के संगीत निर्देशन में उन्होंने फिल्म 'ढोलक' में दो सोलो और दो युगलगीत गाए थे। सतीश बत्रा के साथ उनका गाया युगलगीत 'मौसम आया है रंगीन बजी है कहीं सुरीली बीन' और सोलो 'चोरी चोरी आग सी दिल में लगा के चल दिए' उन जमाने में बहुत पसन्द किए गए थे।

1950 के दशक में सुलोचना जी ने 'ईश्वरभक्ति', 'एक्टर', 'काले बादल', 'दामाद', 'फॉर लेडीज़ ओनली' (तितली), 'मुखड़ा', 'सागर', 'ज़माने की हवा', 'ममता', 'आग का दरिया', 'फरमाईश' और 'भाग्यवान' जैसी फिल्मों में सोनिक, श्यामसुंदर, अज़ीज़ हिंदी, वसंत देसाई, चित्रगुप्त, अविनाश व्यास, प्रेमनाथ, विनोद, एस.एन.त्रिपाठी, एस.के.पाल, नीनू मजूमदार, गुलशन सूफी, माधवलाल मास्टर, हुस्नलाल भगतराम और जमाल सेन जैसे संगीत कारों के निर्देशन में करीब 75 गीत गाए।

सुलोचना जी बताती हैं, 'साल 1952 में मैंने आचार्य अत्रे की मराठी फिल्म 'हीच माझी लक्ष्मी' में लावणी गाई थी, जिसके संगीतकार वसंत देसाई थे। निर्माता-निर्देशक, कैमरामैन और फ़िल्म सम्पादक श्यामराव चव्हाण उन दिनों तमाशा पर फिल्म 'कलगी तुरा' बना रहे थे। श्यामराव चव्हाण निर्माता-निर्देशक भालजी पेंढारकर के बेहद करीबी थे और उन्होंने भालजी पेंढारकर के साथ कई फिल्में की थीं। मेरी लावणी सुनकर श्यामराव चव्हाण ने मुझे 'कलगी तुरा' में गाने के लिए बुलाया, जिसके संगीतकार दत्ता कोरगांवकर थे। और फिर हालात ऐसे बने कि साल 1953 में इन्हीं श्यामराव चव्हाण के साथ मेरी शादी हो गयी। शादी के बाद मैंने अपना पूरा ध्यान घर-गृहस्थी में लगा दिया। क़रीब तीन साल तक मैं गायन से अलग रही।'

क़रीब तीन साल बाद सुलोचना जी ने एक बार फिर से पार्श्वगायन शुरू किया। और जल्द ही वो पूरे महाराष्ट्र में एक उत्कृष्ट लावणी गायिका के तौर पर पहचानी जाने लगीं। पार्श्वगायन के इस दूसरे दौर में सुलोचना जी ने वसंत पवांर, राम कदम, बाल पलसुले, विट्ठल शिंदे, श्रीनिवास खले, नंदू होनप और विलास जोगलेकर जैसे अग्रणी मराठी संगीतकारों के निर्देशन में कई फिल्मों में लावणी गाई। साल 1966-67 में उन्हें महाराष्ट्र सरकार की ओर से 'लावणी साम्राज्ञी' के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा उन्होंने साल 2011 में महाराष्ट्र शासन का 'लता मंगेशकर पुरस्कार' और 2013 में भारत के राष्ट्रपति के हाथों 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार' समेत कई अन्य पुरस्कार भी प्राप्त किए।

सुलोचना जी के मुताबिक साल 1968 में बनी मराठी फिल्म 'अंगई' उनकी आखिरी फिल्म थी, जिसमें उन्होंने राम कदम के संगीत निर्देशन में लावणी गायी थी। फिल्मों से अलग होने के बाद सुलोचना जी लावणी के चैरिटी शोज में व्यस्त हो गयीं। उन्होंने पूरे महाराष्ट्र में चैरिटी शोज़ के ज़रिए उन्होंने स्कूलों, मंदिरों, अस्पतालों, अनाथ आश्रमों, श्मशान भूमि और गरीबों की मदद आदि के लिए पैसा जुटाया। यही वजह है कि महाराष्ट्र के कोने-कोने में आज भी उनका नाम बेहद सम्मान के साथ लिया जाता है।

सुलोचना जी के पति का निधन 2007 में हुआ। उनके बड़े बेटे जय मराठी रंगमंच के जाने-माने परकशनिस्ट थे। जय का निधन 2008 में हुआ। उनके छोटे बेटे विजय चव्हाण मशहूर ढोलकी वादक हैं और लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल, बप्पी लाहिड़ी, वनराज भाटिया, अन्नू मलिक, आनंद मिलिंद, लुई बैंक्स जैसे संगीतकारों के साथ काम कर चुके हैं। 'बड़ा दुख दीना' (रामलखन), 'एक दो तीन' (तेजाब), 'मैं तेरा तोता' (पाप की दुनिया) जैसे हिट गीतों के अलावा वो रवीन्द्र जैन के साथ फ़िल्म 'हिना' के गीतों में भी ढोलकी बजा चुके हैं। साथ ही पिछले 20 सालों से मशहूर तबला वादक उस्ताद ज़ाकिर हुसैन के साथ दुनियाभर में होने वाले उनके स्टेज कार्यक्रमों में भी हिस्सा लेते आ रहे हैं।

सुलोचना (कदम) चव्हाण जी बेटे विजय, बहू और पोते अजय के साथ फणसवाड़ी (गिरगांव) में रहती हैं और आने वाले मार्च के महिने में 88 वर्ष की होने जा रही हैं।

तुम्हीं तो व्याप्त हो शक्ति रूपेण

सौंदर्य, दया, ममता
और शालीनता के
अनुपम रसायन से निर्मित
दिव्य प्रतिमा हो तुम।
हे स्नेहमयी
तुम्हीं तो व्याप्त हो
सम्पूर्ण सृष्टि में शक्ति रूपेण।
फिर भी लोग
तुम्हें पहचानते नहीं।
सौदेबाज अर्थ पिशाच
छापते तुम्हारे न्यून वस्त्र वाले चित्र
विशाल बैनरों
रंगीन विज्ञापनों में।
लम्पट लोगों से शर्मसार है पृथ्वी
जो नन्हीं बालिका से लेकर
प्रौढ़ा तक से
दुष्कर्म करते हिचकते नहीं।
वो दुष्कर्मियों का
मनोविकार ही तो है
जो कभी लेता तंदूरकांड शक्ल
या फिर बनता है हाहाकार
तेज़ाब पीड़िता का।
दृश्यमान आज
अश्लीलता है
मनोरंजन का आधार
वैभव का चकाचौंध छाया है
रंगीन अदाओं के साथ
नृत्यमग्न माया है।
कब तक चलेगा ये सब
बहुत हो गया
प्रस्तुत हो जाओ अब
शक्तिशालिनी,
सिंहवाहिनी हे शिवानी
दुष्टों का संहार कर जाओ
ऐसा वातावरण बना दो जग में
गूंजे यह मंत्र
यत्र नार्यस्तु पूज्यंते
रमन्ते तत्र देवता।

गोपाल प्रभाकर
जयपुर (राजस्थान)
मो.
9928770206

इच्छाशक्ति से अपनी दुनिया बदल डाली-विराली

सन 2006 में अपनी भारत यात्रा के कुछ दिनों बाद में एक दिन उन्हें तेज सिरदर्द और फिर बुखार हुआ। चिकित्सकों ने मामूली बुखार समझकर उन्हें कुछ दवाइयां दे दी पर उन्हें आराम नहीं हुआ और तबीयत बिगड़ती गई। 2 साल के लंबे इलाज के बाद आखिर में पता चला कि उन्हे ट्रांस्वर्स मायलिटिस है ।

पिछले महीने जब विराली को मुंबई में एक समारोह के दौरान मंच पर देखा तो उनके चेहरे के उस अद्भुत तेज और उनकी सहजता ने मुझे उनके बारे में और जानने को विवश कर दिया। जल्द ही मेरी ख्वाहिश पूरी हुई मेरे एक संदेश पर ही वो माही संदेश के इस साक्षात्कार के लिए राजी हो गईं।

ममता पंडित
सह संपादक
माही संदेश

तीस वर्ष की इस छोटी आयु में भी विराली ने अपने जीवन में एक बड़ा मुकाम हासिल कर लिया है। इतनी छोटी उम्र में एक प्रेरक वक्ता, एक प्रसिद्ध मॉडल तथा सन 2017 में बीबीसी की प्रमुख 100 महिलाओं में स्थान पा चुकी हैं। quora पर उनके एक लाख से अधिक फॉलोवर्स हैं और उनके लिखे प्रेरणात्मक जवाबों को एक करोड़ से ज्यादा बार पढ़ा जा चुका है।

नया कदम

विराली का कहना है कि उनके इस सफर की शुरुआत quora पर लिखने से हुई जो एक जो एक प्रचलित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है। quora पर लोग विभिन्न विषयों पर सवाल पूछते हैं तथा विषय के जानकार उनके जवाब लिखते हैं। विराली ने हर तरह के जवाब लिखे लेकिन वे मुख्यत: निराशा से घिरे, जीवन में हताश लोगों के सवालों के जवाब जवाब देती थी। उनके जवाबों में एक अद्भुत सकारात्मक ऊर्जा थी। कभी हार ना मानने वाली और दृढ़ इच्छाशक्ति से भरपूर उनके प्रशंसकों की संख्या बढ़ती गई। उनकी इस लोकप्रियता की बदौलत उन्हें टेडेक्स नामक प्रसिद्ध कार्यक्रम में प्रेरक वक्ता के रूप में बुलाया गया।

अनोखा मोड़

यह सब पढ़ते हुए आपके जहन में यह सवाल अवश्य आया होगा कि विराली को इतनी सकारात्मक ऊर्जा कहां से मिलती है इसकी वजह है विराली ने स्वयं यह जीवन जिया है। 14 वर्ष की छोटी आयु में ही वे एक गंभीर बीमारी का शिकार हुई जिसकी वजह से उनके शरीर का निचला हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया। पिछले 16 सालों से व्हीलचेयर पर रहते हुए उन्होंने ये सारी उपलब्धियां हासिल की हैं। विराली का जन्म अमेरिका में हुआ। सन 2006 में अपनी भारत यात्रा के कुछ दिनों बाद एक दिन उन्हें तेज सिरदर्द और फिर बुखार हुआ। चिकित्सकों ने मामूली बुखार समझकर उन्हें कुछ दवाइयां दे दी पर उन्हें आराम नहीं हुआ और तबीयत बिगड़ती गई। 2 साल के लंबे इलाज के बाद आखिर में पता चला कि उन्हे ट्रांस्वर्स मायलिटिस है। यह एक न्यूरोलॉजिकल अवस्था है, जिसमें रीढ़ की हड्डी में सूजन आ जाती है और नर्व फाइबर्स क्षतिग्रस्त हो जाते हैं।

प्रेरणा

जरा सोचिए पैरों में लगी मामूली चोट ही हमें कितना परेशान करती है। हम चाहते हैं कि मजबूरी व झुंझलाहट से भरे दिन जल्दी से जल्दी खत्म हो जाएं। वहीं विराली इतने लंबे समय से एक दिव्यांग के रूप में जीवन जी रहीं हैं। उनके माथे पर कहीं कोई शिकन नहीं होती और हमेशा अपने चेहरे पर मुस्कान सजाये होती हैं। वे कहती हैं कि उन्होंने स्वयं इस बीमारी के बाद बहुत बुरा समय देखा है। वे निराश, हताश और तनावग्रस्त थी। वे अपने इस नए जीवन का पूरा श्रेय अपनी मां को देती है। वे कहती हैं कि उनकी मां ने उन्हें स्वयं से प्रेम करना सिखाया और स्वयं को स्वीकार करना सिखाया और यही खुशहाल जीवन जीने की और उनका पहला कदम था। मॉडलिंग की दुनिया में जाना उनका एक सपना था और इस हादसे के कुछ वर्षों बाद ही उन्होंने मिस व्हीलचेयर का पुरस्कार जीता। उनकी यह बीमारी उनके हौंसले से हार गई।

MyTrainToo

#MyTrainToo से भारतीय रेलवे के लिए शुरू किया गया एक अभियान है। यह अभियान इसलिए शुरू किया क्योंकि जब विराली मुम्बई में थी, तो उन्होंने तीन बार एक्सप्रेस वे ट्रेनों से यात्रा की थी, जहां पहुंच की कमी के कारण उनसे छेड़छाड़ की गई थी। उनके इस अभियान की वजह से पूरे केरल में पोर्टेबल रैंप और गलियारे के आकार के व्हीलचेयर को लागू किया गया है। छह रेलवे स्टेशनों को दिव्यांगों के लिए सुलभ बनाया गया। विराली कहती हैं कि दिव्यांग लोगों की ज्यादातर समय अवहेलना होती है, जो अनुचित है। वे सिर्फ इसलिए ये लड़ाई लड़ रही हैं ताकि समाज में उनके जैसे और लोगों को समान अवसर मिलें।

संदेश

विराली का कहना है कि हर इंसान में कोई ना कोई कमी होती है हमें उस कमी के बावजूद स्वयं को स्वीकार करना होता है। जब आप अपने आप से प्यार करने लगते हैं तो बाहरी दुनिया आपको कैसे देखती है या आपके बारे में क्या सोचती है जैसे सवाल खत्म हो जाते हैं। वे यह भी कहती हैं कि जीवन की हर लड़ाई आपको अकेले लड़नी होती है आपको बैसाखी की तरह आसपास सहारे मिल जाते हैं लेकिन फिर भी चलना आपको ही है। विराली के प्रेरणादाई विचारों के बारे में और जाने के लिए आप उन्हें कोरा या ट्विटर पर फॉलो कर सकते हैं। मानव की दृढ़ इच्छाशक्ति की जीती जागती मिसाल हैं विराली मोदी।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/450/2018-20
समाचार पत्र की पंजीयन संख्या : RAJHIN/2018/75539

प्रकाशन की तिथिः माह की 1 तारीख
प्रेषण दिनांक : हर माह की 5 तारीख, सी.एस.ओ. गांधीनगर, जयपुर

अप्रैल माह में आ रहा है माही संदेश का

बाल विशेषांक

बच्चों द्वारा लिखी गई रचनाएं सादर आमंत्रित हैं...

कविता/लघुकथा/आलेख/ साक्षात्कार या किसी भी विषय पर बच्चों के विचार आदि आमंत्रित हैं

ईमेल
editormahisandesh@gmail.com
मोबाइल
9828673031

माही संदेश

हिन्दी पत्रिका के सदस्य बनें

: कार्यालय :

माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर (राजस्थान)।

सफलतम दो वर्ष

बेहद कम समय में माही संदेश मासिक पत्रिका ने न केवल राजस्थान बल्कि देश और विदेश में भी अपनी पहचान बनाई है, इस लोकप्रिय पत्रिका को आप ऑनलाइन भी पढ़ सकते हैं और हर माह अपने घर/दफ्तर में भी प्राप्त कर सकते हैं...

वेबसाइट
www.mahisandesh.com
व्हाट्सएप
9828673031

सदस्यता शुल्क

दो वर्ष : ₹ 800
पंचवर्षीय : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 11000

चेक **'Mahi sandesh'** (माही संदेश) के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए। रजिस्टर्ड डाक से प्रति मंगवाने पर (प्रति वर्ष 250/- रुपए) अतिरिक्त देय डाक खर्च शुल्क भेजें।

भवदीय,
'रोहित कृष्ण नंदन'
संपादक : 'माही सन्देश'
खाता संख्या : 37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार, हीरापुरा, अजमेर रोड, जयपुर
पेटीएम-9887409303

लिखते हैं तो स्वागत है...

अगर आप कविता, लघु कथा या सामाजिक विषयों पर लिखते हैं तो आप अपनी लेखन सामग्री हमें अपनी तस्वीर व पते के साथ ईमेल या डाक के माध्यम से भेज सकते हैं। चुनी हुई रचनाओं को माही संदेश के आगामी अंकों में प्रकाशित किया जाएगा।

ईमेल- **mahisandesh31@gmail.com, editormahisandesh@gmail.com**
Mob. & whatsapp - 9887409303, 9828673031

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें
प्रेषक :
संपादक (माही संदेश)
50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)। मो. 9887409303

सेवा में,

@MahiSandesh MAHI SANDESH https://www.facebook.com/hindimagazinemahi/

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक **रोहित कृष्ण नन्दन** द्वारा कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स, 448, बाक्लीवाल भवन, लाल जी सांड का रास्ता, जयपुर से छपवाकर माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर, अजमेर रोड, जयपुर-302021 से प्रकाशित किया। मो. 9887409303